अहमद नदीम कासमी

और उनकी शायरी

संपादन: प्रकाश पंडित

अहमद नदीम कासमी
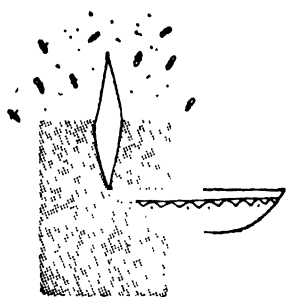
और उनकी शायरी

सम्पादक

प्रकाश पण्डित
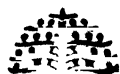
राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

प्रथम संस्करण
सितम्बर, १९५९

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

नौजवां सीनों में मुस्तक़बिल की करता हूं तलाश
मक़बरों में ढूंडता हूं, गुज़रे वक़्तों के क़दम

"सावधान ! अहमद नदीम क़ासमी आ रहा है। और आदरवश पूरा वातावरण दम साध लेता है। यह एक विचित्र प्रकार का उल्लास-मिश्रित भय है, जो नदीम क़ासमी के आते ही महफ़िल पर छा जाता है और सब लोग उस जादू भरे भय में लिपटे-लिपटाये झूलते रहते हैं।"

अहमद नदीम क़ासमी के सम्बन्ध में उर्दू के एक लेखक 'फ़िक्र' तौंसवी के इन शब्दों का अर्थ केवल वही लोग समझ सकते हैं, जो व्यक्तिगत रूप से क़ासमी को जानते हों या जिन्होंने उसे किसी महफ़िल में आते देखा हो। यह बड़ी विचित्र वास्तविकता है कि क़ासमी के बुज़ुर्ग रिश्तेदार, और बुज़ुर्ग साहित्यकार भी, कि जिनके सामने स्वयं क़ासमी को सादर झुक जाना चाहिये, उसकी उपस्थिति में उसके प्रति प्रेम-भाव के साथ-साथ श्रद्धा-भाव में भी ग्रस्त हो जाते हैं। उसकी किसी बात का उत्तर देने की बजाय उसकी हां में हां मिलाने लगते हैं। यहां तक कि कभी-कभी इस व्यवहार से स्वयं क़ासमी बौखला उठता है।

जहां तक उसके सम्बंधियों का सम्बंध है, मेरे विचार में उनकी श्रद्धा का कारण कुछ धार्मिक मान्यतायें हैं क्योंकि वह एक 'पीरज़ादा' है और स्वयं क़ासमी के कथनानुसार उसने

अपने जूतों को उन 'मुरीदों' के झुरमट में इस प्रकार ग़ायब होते देखा है कि प्रत्येक व्यक्ति की आंखें उन्हें चूमकर चमक उठीं और हर मुरीद के चेहरे पर बहुत बड़े धार्मिक बुज़ुर्ग के सुपुत्र के जूतों को छूकर एक दैवी तेज छा गया। और चूंकि उसने अपने जीवन में कभी अपने बुज़ुर्गों को किसी शिकायत का अवसर नहीं दिया और अपने सदाचार में कोई त्रुटि नहीं आने दी, इसलिये उसके बुज़ुर्ग उससे बड़े स्नेह तथा श्रद्धा से पेश आते हैं, लेकिन आस्तिक और नास्तिक, प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी, हर श्रेणी के साहित्यकार क्यों इतने आदर-सम्मान से उसका नाम लेते हैं और क्यों उससे इतने प्रभावित हैं, यह भेद बिना उससे मिले या उसकी रचनाओं का अध्ययन किये समझ में नहीं आ सकता।

उससे मिलने और उसकी रचनाओं का अध्ययन करने से जो बात हमें सबसे पहले अपनी ओर खेंचती है, वह है उसके व्यक्तित्व और उसकी कला में विमलता। एक बड़े कलाकार के लिये जहां कई और गुणों की आवश्यकता होती है वहां उसमें विमलता का गुण सबसे आवश्यक बल्कि अनिवार्य है। कोई कलाकार उस समय तक महान साहित्य की रचना नहीं कर सकता जबतक कि अपने विचारों-भावनाओं और सिद्धांतों को बिना लीपापोती के (कलात्मक ढंग से) प्रस्तुत करने की उसमें क्षमता और साहस न हो। अहमद नदीम क़ासमी की शायरी के क्रमशः अध्ययन से हम उसके किसी काल के सिद्धान्तों से तो असहमत हो सकते हैं, लेकिन उसकी कलात्मक विमलता से किसी प्रकार इन्कार नहीं कर सकते।

और यह उसकी कलात्मक विमलता ही है, जिसके कारण मित्र, शत्रु सभी उसका इतना आदर करते हैं।

आधुनिक उर्दू साहित्य का यह आदरणीय शायर जिसका असल नाम अहमद शाह है २० नवम्बर सन् १९१६ को ज़िला शाहपुर (पश्चिमी पंजाब) के एक छोटे से पहाड़ी गांव 'अंगा' में पैदा हुआ। पीर-ज़ादा होने पर भी घर की हालत किसी निर्धन 'मुरीद' के घर से भी बदतर थी और पिता के देहांत के बाद तो "पहनने को मोटा-झोटा, खाने को जंगली साग और आग तापने को अपने ही हाथों से चुने हुए उपले" रह गये थे। अपने उन दिनों के जीवन के बारे में एक जगह वह लिखता है कि "पाठशाला जाने से पहले मेरे वे आंसू बड़ी सावधानी से पोंछे जाते थे जो माता से केवल एक पैसा प्राप्त करने में असफल होने के दुःख पर बह निकलते थे। लेकिन मेरे वस्त्रों की सफ़ाई, मेरे बस्ते का ठाठ और मेरी पुस्तकों की 'गेट-अप' किसी से कम न होती थी। घर से बाहर उत्कृष्टता-भाव छाया रहता था और घर में प्रवेश करते ही वे सब बुलबुले छिन्न भिन्न हो जाते थे जिन्हें मेरे बचपन के सपने तराशते थे। प्याज़ या सब्ज़ मिर्च या नमक-मिर्च के 'सम्मिश्रण' से रोटी खाते समय जीवन बड़ा भयंकर प्रतीत होता था और जब मैं अपने ही खानदान के बच्चों में खेलने जाता था तो आंखों में भय होता था और दिल में ग़ुस्सा। खानदान के बाक़ी सब घराने खाते-पीते थे, जीवन पर झोल चढ़ाये रखने का तकल्लुफ़ केवल हमारे भाग्य में आया था। जिन सगे-सम्बंधियों ने पिता की गद्दी पर क़ब्ज़ा जमाया, उन्होंने उनकी पत्नी, एक बेटी

दो बेटों और स्वयं उनके लिये कुल डेढ़ रुपया मासिक (आधे जिसके बारह आने होते हैं) वज़ीफ़ा मुक़र्रर किया। तीन पैसे प्रति-दिन की इस आय में माता मुझे प्रति-दिन एक पैसा देने की बजाय मेरे आंसू पोंछ देना अधिक आसान समझती थीं।"

प्रत्यक्ष है कि यह झोल अधिक दिनों तक न चल सका और शिक्षा-दीक्षा के लिये उसे अपने सम्बंधियों के हाथों की ओर देखना पड़ा।

"अपने एक सम्बंधी की आर्थिक सहायता और कुछ अपनी हिम्मत से मर-मिटकर १९३२ में बी० ए० किया और अब यह परवाना हाथ में लेकर और कुछ ख़ानदानी उपाधियों का पुलंदा कांधों पर लादकर और पश्चिमी शिष्टाचार और विनय-रीति रट कर मैंने नौकरी की भीख मांगनी शुरू की। १९३५ से १९४५ ई० तक लगभग पूरे पंजाब का चक्कर लगाया। ख़ानदान के पुराने अभिभावकों ने मुस्कराकर देखा और सहानुभूति प्रकट करते हुए सैर को निकल गये। एक्स्ट्रा-एसिस्टैंट कमिश्नरी, तहसीलदारी और नायब-तहसीलदारी से लेकर अंजुमने-हिमायते-इस्लाम में क्लर्की तक के लिए नित-नये ढंग से दर्ख़्वास्तें लिखीं। रिफ़ार्म-कमिश्नर के दफ़्तर में बीस रुपये मासिक पर मुहर्ररी करता रहा। ज़िला मिंटगुमरी में नौ दिन टेलीफ़ोन आपरेटर रहा। प्रकाशन-विभाग (पंजाब) की पत्रिका 'तहज़ीबे-निसवां' के लिए अंग्रेज़ी कहानियों का अनुवाद किया। एक महानुभाव को पांच सौ पन्नों की एक पुस्तक चालीस रुपये के बदले लिख दी (जो अब तक उन्हीं के नाम से बिक रही है)। रावलपिंडी में टाइप सीखता रहा।

पंचायत विभाग से लेकर आर्मी एकाउंट्स तक के दफ़्तरों में मेरा नाम उम्मीदवार के तौर पर दर्ज रहा। साथ-साथ मांगे-तांगे का लिबास पहनकर डिप्टी कमिश्नरों और फ़िनानशल कमिश्नरों की ड्योढ़ियों पर सलामी देता फिरा कि "मेरे अमुक बुज़ुर्ग ने अंग्रेज़ जनरल मैक्वैल को मनीपुर सेनाओं का गुप्त पता दिया और 'शेर दिल' की उपाधि प्राप्त की"—"मेरे अमुक सम्बंधी ने तिब्बत के मोर्चे पर विजय पाने में लार्ड कर्ज़न को यह सहायता दी"—"मेरे अमुक रिश्तेदार को महायुद्ध में सिपाही भरती करने के पुरस्कार-स्वरूप इतने तमग़े और उपाधियां प्रदान की गईं......"

लेकिन ऐसी कड़ी परिस्थितियों से गुज़रने के बावजूद, जबकि उसे तीन-तीन दिन के फ़ाक़े भी करने पड़े, जब एक बार उसे कहीं से कुछ क़लम की मज़दूरी मिल गई तो उसने बजाय जी भर के खाने के एक सिनेमा हाल की राह ली। तीन बजे वहां से निकलकर एक और सिनेमा हाल में घुस गया। शाम को वहां से निबटा तो एक और क्रीड़ास्थल में चला गया। रात के नौ बजे वहां से निकला तो जेब में एक और मनोरंजन का साधन मौजूद था। अतएव एक और सिनेमा हाउस में ऊंचे दर्जे का टिकट लेकर बैठ गया। जब वहां से एक बजे निकला तो जेब में केवल एक दवन्नी थी। "भूखा-प्यासा, बिना किसी मतलब के, नहर की ओर निकल गया। मन्द गति से बहते हुए पानी में सितारों का मटियाला प्रतिबिम्ब देखता रहा कि पौ फटी और मुझे महसूस हुआ कि कल सुबह से मैं अपने आप में नहीं हूं। ये तथा इस प्रकार की कई और आवारगियां

मेरे ऐसे नौजवानों की प्रतिदिन की घटनायें हैं, लेकिन यहां मैं केवल अपना ज़िक्र कर रहा हूं—एक शायर का ज़िक्र—जिसकी शायरी पर यदि ऐसी घटनाओं का प्रभाव न पड़े तो वह अपनी कला के प्रति सच्चा नहीं। वह केवल नक़्क़ाल और अनुगामी है।"

अहमद नदीम क़ासमी की शायरी में हमें किसी प्रकार की नक़्क़ाली या अनुकरण का आभास नहीं मिलता। अपने जीवन की विभिन्न घटनाओं के अनुभवों द्वारा (जिनका सिलसिला आज भी जारी है) उसने अपना एक अलग मार्ग निकाला और जिस समय जो महसूस किया बड़ी दयानतदारी से प्रस्तुत भी कर दिया। वह यदि उदास और मलिन हुआ तो हमें उदास टीलों, वीरान मरुस्थलों और उजाड़ खंडहरों में ले गया और झुकी हुई खजूरों, चकराते हुए बगूलों और बिना फूल-पत्ती के बबूलों द्वारा हमारे मन-मस्तिष्क में निराशा-विवशता और करुणा उत्पन्न की। प्रकृति और नारी के सौन्दर्य से प्रभावित हुआ तो हमें गांव की सलोनी संध्याओं, मुस्कराते हुए चश्मों और गाते हुए पनघटों पर ले गया। उसने हमें धानी-चूड़ियों की खनक सुनवाई। गोरी बाहों की लचक और थरथराते झूमरों की फबन और ढोलक पर नाचती हुई कोमल उंगलियों की तड़प दिखाई। क्रोधित हुआ तो उसकी ललकार से धरती-आकाश कांपने लगे और जब सोचने के मूड में आया तो अपनी सोच के अनुसार सब गुत्थियां सुझलाकर रख दीं।

क़ासमी की सोच का उल्लेख करते हुए मुझे अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध कवि 'कोलरिज' का यह कथन याद आ रहा है कि

कोई व्यक्ति बड़ा कवि नहीं हो सकता जब तक कि वह एक विशाल-हृदय दार्शनिक न हो। इस कथनानुसार अहमद नदीम क़ासमी की १९४५ (बल्कि १९४७) तक की शायरी में हमें किसी महान् दर्शन का पता नहीं चलता, बल्कि 'इक़बाल' की तरह यहां-वहां अनेक सिद्धांत मिलते हैं जिनमें इस्माल को पूरे विश्व की जीवन-व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत करने की भावना सबसे उग्र है और वह बड़े गौरव से एलान करता है कि :

मैं अपना रिश्ता शहे-ग़ज़नवी से जोड़ूंगा

लेकिन 'इक़बाल' के विपरीत उसके सिद्धांतों में धीरे-धीरे एकसारता और दो-टूकपन आता गया और सामाजिक परिवर्तनों के बोध द्वारा उसने उस जीवन-दर्शन को पा लिया, जिसके बिना आज का शायर किसी प्रकार बड़ा शायर नहीं बन सकता। आज वह जन-साधारण के उस आन्दोलन से सम्बन्धित है जो मनुष्य के सुन्दर भविष्य के लिए प्रतिक्रियावादी शक्तियों से लोहा ले रहा है।

उसके आज के सिद्धांत जैसा कि मै कह चुका हूं धीरे-धीरे ढले हैं। देव-बाणी की तरह एकदम उसके मस्तिष्क में नहीं उतरे। इनके लिये उसे काफ़ी लम्बा सफ़र करना पड़ा है। 'पाकिस्तान ज़िन्दाबाद' के नारे लगाने पड़े हैं। तैमूर के भयावह व्यक्तित्व को न्याय के सिंहासन पर बिठाना पड़ा है। धर्म के नाम पर ख़ून की नदियां बहते और अबला नारियों का सतीत्व लुटते देखना पड़ा है। और साथ ही साथ सोचना पड़ा है कि अमुक व्यक्ति निर्धन है तो क्यों है ? अमुक ने अपनी बेटी बेच दी तो क्यों बेच दी ? अमुक ने चोरी की तो क्यों की ? अमुक

बेगुनाह ने थानेदार के सामने नाक से लकीरें खेंचीं तो क्यों खेंचीं और अमुक चुपके से बेगार पर काम करने चला गया तो क्यों चला गया ? और इसी सोच ने जब क्रियात्मक-रूप धारण किया, सिकंदर और फ़ग़फ़ूर की जगह किसान और मज़दूर ने सम्भाल ली और वह दलित-दरिद्र आदमी के गीत गाने लगा, अत्याचारी को भरे बाज़ार में अत्याचारी कहने लगा तो पाकिस्तान सरकार ने उसे जेल में डाल दिया ।

क्लर्की, मुहर्ररी, एडीटरी, बेकारी और महकमा आबकारी ने यद्यपि उसे हर समय अपने लौह-पंजों में जकड़े रखा और रचनात्मक कार्य करने का बहुत कम अवकाश दिया, किन्तु उसके परिश्रम और उसकी सख़्तजानी पर आश्चर्य होता है जब हम देखते हैं कि उसकी लिखी हुई नज़्मों, ग़ज़लों, रुबाइयों, क़तओं, कहानियों, ड्रामों और लेखों की गिनती करना न केवल कठिन बल्कि असम्भव है । मेरे सम्मुख इस समय उसके केवल तीन कविता-संग्रह 'रिमझिम' 'जलालो-जमाल' और 'शोला-ए-गुल' हैं और मैं इन पुस्तकों की पृष्ठ-संख्या देखकर ही परीशान हो रहा हूं कि अपनी इस संक्षिप्त-सी आयु में क़ासमी ने ये सब कैसे लिख लिया ?

क़ासमी ने ये सब कैसे लिख लिया, यह तो मैं नहीं कह सकता लेकिन उसके लिखने के ढंग से जिस तपस्या का पता चलता है, वह प्रत्येक शायर या लेखक के बस की बात नहीं। उसकी अधिकतर नज़्में, ग़ज़लें और कहानियां रात के दो बजे के बाद की रचनायें हैं । वह नींद का सख़्त दुश्मन है और इस दुश्मनी को कभी कमज़ोर नहीं होने देता । चाय पर चाय और

सिग्रेट पर सिग्रेट पीता रहता है। मित्र-मुलाक़ातियों को दो-दो बजे रात तक अपने यहां बिठाये रखता है ताकि नींद का खुमार सफल न हो पाये और उसकी वह रोमाँटिक परिधि शुरू हो सके ······और जब चारों तरफ़ चुप्पी छा जाती है तो वह चारपाई पर उकड़ूं बैठा कोई कहानी लिख रहा होता है। नज़्म या ग़ज़ल लिखना हो तो लिहाफ़ ओढ़ कर लेट जाता है और धीरे-धीरे गुनगुनाता और शे'र लिखता रहता है। अगर नज़्म या कहानी का मूड पैदा न हो सके तो वह अपने कमरे के एक और पहलू की ओर अपने तीर-कमान सीधे कर लेता है। उस के पलंग, कुर्सियों, अलमारियों पर हर तरफ़ पुस्तकें, काग़ज़, पत्र-पत्रिकायें बिखरी रहती हैं। मेज़ पर किताबों-काग़ज़ों के ढेर। सिग्रेट के ख़ाली डिब्बे, कोई इधर कोई उधर। ऐश-ट्रे जो कभी मेज़ पर होता है, कभी लिहाफ़ पर, कभी तकिये पर और जब भर जाता है तो हाथ लगने से उलट जाता है— रात के दो बजे इस बेतरतीबी से तंग आकर वह अलमारियों में से पुस्तकें निकाल लेगा। मेज़ और पलंग पर बिखरी हुई पुस्तकों को उनमें शामिल कर लेगा। काग़ज़ों, पत्र-पत्रिकाओं से इस ढेर में वृद्धि करेगा और फिर इन पहाड़ों के बीच आलती-पालती मार कर बैठ जाएगा। पुस्तकों, काग़ज़ों और लेखों को तरतीब देता रहेगा। उन्हें अलमारियों में सजायेगा। मेज़ पर जमायेगा। काग़ज़ के एक-एक पुर्ज़े की परख करेगा और फिर अध्ययन शुरू करेगा। और इस तरतीब से शुरू करेगा कि जब सुबह को उठेगा तो मेज़ पर पुस्तकें बिखर रही होंगी। अलमारियों में फिर उसी बेतरतीबी से ठुंसी होंगी।

तकिये के नीचे पुस्तकों-पत्रिकाओं का ढेर पड़ा होगा और रात जिस काग़ज़ पर नज़्म या ग़ज़ल लिखी थी, वह मुड़ी-तुड़ी हालत में लिहाफ़ के एक कोने में पड़ा होगा।

अहमद नदीम क़ासमी ने अपनी शायरी की शुरूआत ग़ज़ल से की और ग़ज़ल को सीमित वर्णन-शैली मानने वाले संकीर्णतावादी आलोचकों के विरोध के बावजूद, नज़्मों, क़तओं और रुबाइयों के साथ-साथ वह आज तक बराबर ग़ज़लें लिख रहा है। ग़ज़ल और उसके कारण संगीतधर्मी शायरी को निंदित सिद्ध करने वाले आलोचकों को "ख़ौफ़नाक हक़ीक़त-पसंदों" का नाम देते हुए उसने 'जलालो-जमाल' की भूमिका में लिखा है कि "धड़-धड़ जलते हुए रोम में नीरो का बांसुरी बजाना वाक़ई इंतिहा दर्जे की हक़ीक़त-फ़रामोशी और नादानी है लेकिन तैश में आकर बांसुरी को आग में फेंक देना भी कुछ कम नादानी नहीं। रोम हमेशा तो नहीं जलता रहेगा और फिर ज़िन्दगी में कई बल्कि अकसर ऐसे लम्हे भी आयेंगे जब हमें हथौड़ों और कुदालों की जगह बांसुरी की तरफ़ रुजूअ करना पड़ेगा।" और उसने चेतावनी दी कि "अगर कुछ बरस और ग़ज़ल और ग़िनाई शायरी (संगीत-धर्मी शायरी) से यह बेरुखी जारी रही तो शायरी ख़त्म हो जायेगी और नज़्म की किताबें पोलिटिकल साइंस, अर्थशास्त्र आदि पाठ्य-पुस्तकों का स्थान ले लेंगी।" और ग़ज़ल को सीमित वर्णन-शैली सिद्ध करने वालों को उत्तर देते हुए उसने लिखा कि "ग़ज़ल ज़िन्दगी और उसके माहौल की तमाम ख़ुसूसियात (विशेषताओं) को अपने अन्दर समोकर एक निहायत दिलरुबायाना अंदाज़ में हमेशा,

हर दौर में लतीफ़ (सूक्ष्म) ख़याल-अफ़रोज़ (विचारात्मक) और पायदार अदब (साहित्य) पैदा कर सकती है।" बल्कि कलात्मक परिपक्वता के लिये तो उसने यहां तक कह दिया है कि कोई शायर उस वक़्त तक अच्छी नज़्म नहीं लिख सकता जबतक कि उसमें अच्छी ग़ज़ल लिखने की क्षमता न हो।

'जलालो-जमाल' की भूमिका में उसने कला और सिद्धान्त सम्बंधी और भी कई प्रश्न उठाये थे लेकिन दस बारह वर्ष की इस मुद्दत में स्वयं उसके राजनीतिक (और इसलिये कलात्मक) सिद्धांतों में एक प्रत्यक्ष परिवर्तन आ चुका है, इसलिये उन प्रश्नों की चर्चा की न तो यहां आवश्यकता है और न ही गुन्जाइश। इतना भर कह देना काफ़ी होगा कि उसने कला की प्राचीन परम्पराओं का हमेशा आदर किया है और विषय और शैली के क़रीबी रिश्ते को कभी नज़र-अंदाज़ नहीं किया। लेख की लम्बाई के भय से मैं उसकी शायरी के तिथिवार उदाहरण प्रस्तुत करने की बजाय इस पुस्तक में उसकी १९५० ई० की एक नज़्म 'मौज़ूअ़' शामिल कर रहा हूँ, जिससे हमें उसकी शायरी के विकास और उसके कला-सम्बंधी सिद्धांतों को समझने में पर्याप्त सहायता मिल सकती है।

अंत में क़ासमी के बारे में मैं केवल यह कहना चाहता हूं कि उसने विभिन्न विषयों का जितना बड़ा भंडार, तथा जैसे कलात्मक विश्लेषण और सूक्ष्मतायें उर्दू शायरी को दी हैं और 'अदबे-लतीफ़', 'सवेरा' और 'नुक़ूश' के सम्पादन-काल में साहित्यिक समालोचनाओं द्वारा आधुनिक उर्दू साहित्य की जो गुत्थियां सुलझाई हैं और फिर समाजवादी दृष्टिकोण को अपनाने

के पश्चात जीवन-सुन्दरी के उलझे केशों को जिस सुन्दर ढंग से संवारा है और इस सम्बंध में तरह-तरह के कष्ट झेले हैं, उर्दू साहित्य का इतिहास उसे हमेशा याद रखेगा।

पिछले दिनों राजनीतिक उथल-पुथल के कारण क़ासमी पाकिस्तान के प्रसिद्ध प्रगतिशील पत्र 'इम्रोज़' के सम्पादक की कुर्सी पर से उतर कर एक बार फिर सड़क पर आ गया है।

चयन

ये शे'र

ये शे'र राज़ हैं उन बर्क़-गाम[1] घड़ियों के
झलक रही है तेरी पुतलियों में जिनकी याद
ये शे'र राज़ हैं उन ताबनाक[2] रातों के
लबों तक आके तरसती थी जब मेरी फ़र्याद
ये शे'र राज़ हैं उन रस भरे फ़रेबों के
हुआ है जिनसे मेरी ज़ीस्त का[3] चमन बर्बाद
ये शे'र राज़ हैं उस सर-फिरी जवानी के
हमेशा जिसको रही आरज़ू-ए-अब्रो-बाद[4]
ये शे'र उस फ़लके - बेकरां के[5] तारे हैं
तसव्वुराते - जवां ने[6] जिसे किया ईजाद
ये शे'र मेरे लहू के वो गर्म क़तरे हैं
तपिश से जिनकी दहकने लगी कफ़े-सय्याद[7]
ये शे'र अहदे - मुहब्बत की हैं वो तारीख़ें,
झुकी भवों में समाई हुई है जिनकी याद
ये शे'र मेरे इरादों के चंद ख़ाके हैं
कभी मिटा न सका जिन को दस्ते-इस्तिब्दाद
ये शे'र मेरी मुहब्बत की दास्तानें हैं
ये मेरे माज़ी-ए-मरहूम की[9] ज़बानें हैं

(१९३७)

१. बिजली की-सी तेज़ी से गुज़रने वाली २. प्रकाशमान ३. जीवन का ४. बादलों और ठण्डी हवा की कामना ५. अथाह आकाश के ६. जवान कल्पनाओं ने ७. शिकारी की हथेली ८. अन्याय या अत्याचार का हाथ ९. मृत (बीते) अतीत की

फ़न

एक रक़्क़ासा[१] थी—किस किस से इशारे करती
आंखें पथराईं, अदाओं में तवाज़ुन[२] न रहा
डगमगाई तो सब अतराफ़ से[३] आवाज़ आई—
"फ़न के इस औज[४] पे इक तेरे सिवा कौन गया?"
फ़र्शे-मरमर पे गिरी, गिर के उठी, उठ के झुकी
ख़ुश्क होंटों पे ज़बां फेर के पानी मांगा
ओक उठाई तो तमाशाई संभल कर बोले
"रक़्स का ये भी इक अंदाज़ है—अल्ला! अल्ला!"
हाथ फैले रहे सिल सी गई होंटों से ज़बां
एक रक़्क़ास किसी सिम्त[५] से नागाह[६] बढ़ा
पर्दा सरका तो मग्न[७] फ़न के पुजारी गरजे
"रक़्स क्यों ख़त्म हुआ? वक़्त अभी बाक़ी था!"

◇ ◇ ◇

१. नर्तकी २. संतुलन ३. ओर से ४. शिखर ५. ओर ६. एकाएक ७. सहसा

वक़्त

सरबर-आवुर्दा[1] सनोबर की घनी शाख़ों में
चांद बिल्लौर की[2] टूटी हुई चूड़ी की तरह अटका है
दामने-कोह की[3] इक बस्ती में
टिमटिमाते हैं मज़ारों पे चिराग़
आस्मां सुरमई फ़रग़ल में सितारे टांके
सिमटा जाता है—झुका जाता है
वक़्त बेदार[4] नज़र आता है !

सरबर-आवुर्दा सनोबर की घनी शाख़ों में
सुबह की नुक़रई[5] तनवीर[6] रची जाती है
दामने-कोह में बिखरे हुए खेत
लहलहाते हैं तो धरती के तनफ़्फ़ुस[7] की सदा आती है
आस्मां कितनी बुलँदी पे है और कितना अ़ज़ीम[8]
नये सूरज की शुआ़ओं का मुसफ़्फ़ा[9] आंगन
वक़्त बेदार नज़र आता है !

१. ऊंचे २. कांच की ३. पहाड़ के दामन की ४. जाग्रत
५. रजत ६. प्रकाश ७. श्वास ८. महान ९. साफ़

सरबर-आवुर्दा सनोबर की घनी शाख़ों में
आफ़ताब[1] एक अलाओ की तरह रौशन है
दामने-कोह में चलते हुए हल
सीना-ए-दहर[2] पे इंसान की जबरूत[3] की तारीख़ रक़म करते हैं[4]

आस्मां तेज़ शुआओं से है इस दर्जा गुदाज़[5]
जैसे छूने से पिघल जाएगा
वक़्त तैयार नज़र आता है

सरबर-आवुर्दा सनोबर की घनी शाख़ों में
ज़िन्दगी कितने हक़ायक़ को[6] जनम देती है
दामने-कोह में फैले हुए मैदानों पर
ज़ौक़े-तख़्लीक़[7] ने एजाज़[8] दिखाये हैं लहू उगला है
आस्मां गर्दिशे-अय्याम[9] के रेले से हिरासां[10] तो नहीं
ख़ैर-मक़दम[11] के भी अंदाज़ हुआ करते हैं
वक़्त की राह पे मोड़ आते हैं, मंज़िल तो नहीं आ सकती।

◇ ◇ ◇

१. सूरज २. संसार की छाती ३. महानता, बुज़ुर्गी ४. लिखते हैं ५. नर्म ६. वास्तविकताओं को ७. रचना की रुचि ८. चमत्कार ९. काल-चक्र १०. भयभीत ११. स्वागत

मौज़ूअ[1]

फ़न बड़ी चीज़ है तख़लीक़[2] बड़ी नेअ़मत है
हुस्नकारी कोई इल्ज़ाम नहीं है ऐ दोस्त

है मेरे मद्दे-नज़र आज भी तख़्लीक़े-जमाल[3]
गेसू-ए-शब में[4] उलझते हुए तारों के ख़्याल
वो जवानी के गुलाबों-से महकते हुए जिस्म
फैलती बाँहों में मदहोश लहकते हुए जिस्म
कुंजे-गुलशन की ख़मोशी में उमंगों के हुजूम
प्यार की प्यास में खुलते हुए होंटों की पुकार
आंखों-आंखों में लगन का मुतरन्निम[5] इज़हार
फ़न की तामीर हुई है इन्हीं उनवानों से[6]
यही मक़बूल थे माज़ी के ग़ज़ल-ख़्वानों में
इन्हीं कलियों से खिलाये गए गुलज़ार अब तक
इन्हीं झोंकों से रिवायात में[7] बाक़ी है हयात
मुनअ़किस[8] है इन्हीं आईनों में इन्सां का सबात[9]
मैं अगर इनसे अलग बात करूं तो दरअस्ल
ये फ़क़त गर्दिशे-अय्याम नहीं है ऐ दोस्त

१. विषय २. रचना ३. सौन्दर्य की सृष्टि ४. रात के केशों में ५. मधुर स्वर में ६. शीर्षकों से ७. परम्पराओं में ८. प्रतिबिम्बित ९. स्थायित्व या दृढ़ता

हुस्न बैठा है सरे-राह भिखारी बनकर
मेरा अन्दाज़े-नज़र खाम नहीं है ऐ दोस्त
चंद उड़ते हुए लम्हों की हसीं नक़्क़ाशी
मेरे फ़न का तो ये अंजाम नहीं है ऐ दोस्त
पहले मैं माहियते-हुस्न[1] तो पा लूं, वर्ना
हुस्नकारी कोई इल्ज़ाम नहीं है ऐ दोस्त
जिनकी तख़लीक़ से है हुस्न की क़दरों में[2] दवाम[3]
उनके हाथों की खराशें तो मिटा लूं पहले

जिनकी मेहनत से इबारत है जमाले-आलम[4]
उनको आईना दिखाना भी तो फ़नकारी है
उनकी आंखों में जो शो'ला-सा लरज़ उठता है
उसका एहसास दिलाना भी तो फ़नकारी है
हुक्मरानों ने उक़ाबों का[5] भरा है बहरूप
भोली चिड़ियों को जगाना भी तो फ़नकारी है
खेत आबाद हैं, देहात हैं उजड़े-उजड़े
इस तफ़ावुत[6] को मिटाना भी तो फ़नकारी है
धान की फ़स्ल की तस्वीर है मे'राजे-कमाल[7]
धान की फ़स्ल उठाना भी तो फ़नकारी है
कारखानों से उमड़ता हुआ फ़ौलाद का शोर
तेरी तहज़ीब का इक गीत नहीं तो क्या है

१. सौन्दर्य की वास्तविकता २. मूल्यों में ३. स्थायित्व ४. विश्व की सुन्दरता बनी है ५ बाज़ पक्षियों का ६. अन्तर ७. कला का शिखर

चन्द सदियों के ग़ुलामों का मुकम्मल एक्का
नौअ़-ए-इन्सां[1] की ये इक जीत नहीं तो क्या है
ज़र के ढेरों को उलटती है दराँती की ज़बां
इर्तिक़ा[2] की ये इक रीत नहीं तो क्या है
लबो-रुख़सार को[3] मौज़ूअ़-ए-सुख़न[4] ठहरा लूँ
लेकिन इस रंग का माहौल[5] तो पा लूँ पहले
ज़ुल्फ़ के पेच तो गिन सकता हूं लेकिन ऐ दोस्त
ज़हन के बारे-सलासिल[6] तो उठा लूं पहले
जिनकी तख़लीक़ से फ़नकार सबक़[7] लेता है
उनके हाथों की ख़राशें तो मिटा लूँ पहले

० ० ०

१. मानव-जाति २. विकास ३. होठों और गालों को (प्रेयसी को) ४. काव्य-विषय ५. वातावरण ६. ज़ंजीरों का बोझ ७. पाठ

मुआसिर से[1] !

हो चुका, अब मातमे-तीरा-नसीबी[2] हो चुका
दीदा-ए-पुरनम[3] कई अश्कों के तारे खो चुका
तेरे ग़म से संगज़ारों के[4] कलेजे कट चुके
गहरे - गहरे हट चुके, गुंजान बादल छट चुके
क़स्रे - शाही के[5] सुतूं अपनी जगह से टल चुके
रेशमो - दीबा के हैबतनाक पर्दे जल चुके
रूह के साकिन[6] समन्दर में तलातुम[7] आ चुका
ज़िन्दगी के मुर्दा होंटों पर तबस्सुम आ चुका

वो जहां[8] भी आज तेरे ज़िक्र पर मजबूर है
जो दियारे - माहो - अंजुम से[9] भी कोसों दूर है

सीना-कावी में[10] जो लज़्ज़त है, मुझे मालूम है
लेकिन इस लज़्ज़त में ज़ौक़े-इर्तिक़ा[11] मादूम[12] है
गो तेरे अफ़कार[13] तेरे ज़ो'म में[14] आज़ाद हैं
जिन अक़ायद में[15] तज़बज़ुब[16] हो, वो बेबुनियाद हैं

१. समकालीनों से २. दुर्भाग्य का शोक ३. सजल नेत्र ४. पथरीले ५. राजमहल के ६. शांत ७. तूफ़ान ८. जहान, संसार ९. चांद-सितारों के देश से १०. छाती कूटने में ११. विकास की अभिरुचि १२. लुप्त १३. विचार, रचनायें १४. विचार में १५. मान्यताओं में १६. असमंजस

ज़ह्न में[1] मंज़िल मुअय्यन[2] हो, तो जंचता है सफ़र
हर क़दम पर वर्ना रुकती है ठिठकती है नज़र
तेरे दिल में अज़्म की[3] क़ंदील[4] जलती है ज़रूर
शशजिहत में[5] झिलमिलाते हैं मगर अनवारे-तूर[6]

वो जवानी गेंद है बच्चों की लुढ़काई हुई
वहम के नर्ग़े में[7] जो फिरती है घबराई हुई

गो बहुत मदहोशकुन[8] होते हैं मन्तिक़ के नुकात[9]
ज़िन्दगी को ज़िन्दगी कहना है इर्फ़ाने-हयात[10]
ज़ुल्मतों में[11] कौन दे उसकी तजल्ली का[12] सुबूत
धूप में बेशक चमक उठता है तारे - अंकबूत[13]
इश्क़ो-मस्ती हुस्नो-लज़्ज़त साग़रो-मय ख़ूब हैं
मुझको लेकिन बेकसों के झोंपड़े मरग़ूब[14] हैं
शायरी पर तूने डाले हैं नक़ाब अबहाम के[15]
शो'बदे[16] हैं मेरी नज़रों में ये फ़िक्रे - ख़ाम के[17]

शे'र के धारे में बह लेकिन न यूं रुक रुक के बह
तुझको कहना है अगर, तो बरमला[18] कह, खुलके कह

१. मस्तिष्क में २. नियत ३. संकल्प की ४. काग़ज़ या अबरक से मढ़ा हुआ फ़ानूस ५. छहों ओर (चारों खूंट) ६. एक किंवदन्ती के अनुसार तूर नामक पर्वत पर बिजली चमकी थी और हज़रत मूसा ने ख़ुदा से बातें की थीं (उसी प्रकाश की ओर संकेत है) ७. चंगुल में ८. उन्मत्त करने वाले ९. तर्क की बातें १०. जीवन की पहचान ११. अंधेरों में १२. चमक और झलक का १३. मकड़ी के जाले का तार १४. पसंद १५. गुंजलकों के १६. मायाजाल १७. कच्ची बुद्धि के १८. मुंह पर, साफ़-साफ़

तूने उरियानी को[१] समझा है हक़ीक़त का फ़रोग़[२]
ये हक़ीक़त है मगर तेरी जवानी का दरोग़[3]
ज़हन की अय्याशियों से गो बहलते हैं दिमाग़
लेकिन इन झोंकों में बुझ जाते हैं रूहों के चिराग़
जिस्म इन्सां का मुक़द्दस है, कर इसका एहतराम
जोश में बिफरे हुए जज़्बाते-नफ़सानी को[४] थाम
ज़ख़्म को छेड़ा तो है, इसका मुदावा[५] भी तो कर
तब्ल पर[६] चोटें लगा बैठा है धावा भी तो कर

सिर्फ़ कहना है तो तलक़ीने-अमल[७] करता है क्यों ?
शायरी करते हुए माहौल[८] से डरता है क्यों ?

ऐ मेरे हमदम, मेरे साथी, मेरे हमराज़ सुन
शायरी के साज़ की बैठी हुई आवाज़ सुन
ज़ख़्म-आवर[९] उंगलियों की तेज़ियां किस काम की
इब्तिदा में सुन रहा हूं हिचकियां अंजाम की
नफ़्स की[१०] तहलील[११] कर, या इश्क़ की फबती उड़ा
है तेरे ख़ामे[१२] की हर जुंबिश में अंदाज़े-बुका[१३]

१. नग्नता को   २. उन्नति   ३. झूठ   ४. काम-वासनाओं को
५. इलाज   ६. नक्कारे पर   ७. कर्म करने का उपदेश   ८. वातावरण
९. घायल   १०. अस्तित्व की   ११. विलयन   १२. क़लम   १३. रोने का ढंग

ये तेरे नग़मे हैं या तक़लीद के[1] जिन्नात[2] हैं
गीत हैं तेरे कि सर धुनते हुए ज़र्रात[3] हैं

इस क़दर हस्सास[4] होकर भी ये मस्ती ! क़ह्र[5] है
इन्फ़रादीयत[6] न खो, वर्ना जवानी ज़हर है

हमने ऐसे वक़्त में थामा बग़ावत का अलम[7]
जब जला लेता है क़ंदीले-अमल[8] सदियों का ग़म
हमने ऐसे वक़्त में जांचे हैं फ़ितरत के उसूल
नौजवां जब ज़र के बदले आग करते हैं क़ुबूल
छट गई हैं यक-ब-यक औहाम की[9] धुंदलाहटें
आ रही हैं हर तरफ़ से ज़िन्दगी की आहटें
नीम-वा[10] आंखें हैं और अंगड़ाइयों का ज़ोर है
कौन रक़्सां[11] है ये किस की झांझनों का शोर है

हम अगर अब भी हक़ीक़त को हक़ीक़त जान लें
क्या अजब है इस तड़प की मस्लहत[12] पहचान लें

◇ ◇ ◇

१. अनुकरण के २. प्रेत ३. कण ४. भावुक ५. प्रकोप (हद है) ६. निजी व्यक्तित्व ७. झंडा ८. कार्यरूपी दीपक ६. भ्रमों की १०. अध-खुली ११. नृत्यशील १२. विशेषता, हित

अनदेखा महबूब

घनी शाख़ों में छुपकर जब कोई चिड़िया चहकती है
तो मेरे दिल में क्यों हसरत की चिंगारी भड़कती है
हसीं चौपाए जब चरने को निकलें सब्ज़ा-ज़ारों में[१]
तो मैं क्या ढूंडता रहता हूं संजीदा नज़ारों में
सहर के[२] वक़्त जब पनिहारियां पनघट पे आती हैं
गुलाबी गागरों के ताल पर ताली बजाती हैं
तो मैं उजड़े हुए महलों में किसकी धुन में जाता हूं
शिकस्ता बामो-दर को[३] किसकी ख़ातिर चूम आता हूं
मअ़न[४] जब टूटती रातों में कोयल कूक उठती है
तो मेरे दिल में क्यों मौहूम-सी[५] इक हूक उठती है
ख़ुनुक[६] रातों में जब तारे फ़लक पर[७] टिमटिमाते हैं
मुझे किस पैकरे-ज़ोहरा-जबीं के[८] ख्वाब आते हैं
ये आंखें कौन झपकाता है रह-रहकर सितारों में
ये किसका अ़क्स[९] पड़ता है शफ़क़ के लालाज़ारों में[१०]
गुलाबी सीपियों में वो गुहर बनकर चमकता है
गुलिस्तां में गुलाबो-नस्तरन बनकर महकता है

---

१. चरागाहों में २. सुबह के ३. टूटे दरवाज़ों और छतों को ४. अचानक [५. अस्पष्ट-सी ६. शीतल ७. आकाश पर ८. अत्यन्त सुन्दरी के ९. प्रतिबिम्ब १०. ऊषा के उपवनों में

कभी फ़ानूसे-काफ़ूरी में छुपकर जगमगाता है
कभी वीरानों, खेतों पर घटायें बन के छाता है
कभी पुरख़ौफ़ जंगों में, कभी पुरअम्न शहरों में
कभी उड़ते हुए आंचल की बेतरतीब लहरों में
कभी मोहताज दोशीज़ाओं की बोसीदा झोली में
कभी बच्चों की टूटी, तोतली, मासूम बोली में
कभी मग़मूम आंखों में कभी रौशन चिराग़ों में
कभी जामे-सिफ़ाली में[1] कभी लबरेज़ अयाग़ों में[2]
नशा बनकर मेरे ख़्वाबों पे कोई छाए जाता है
जिधर देखो उधर मुबहम[3] इशारों से बुलाता है
(१९३८)

◇ ◇ ◇

१. मिट्टी के प्याले में २. भरे हुए मदिरा-पात्रों में ३. अस्पष्ट

उम्मीद की किरन

हो गई ऐशगाह जब सुनसां
नज़र आने लगा जहां हैरां
सेज पर गुल पड़े थे मसले हुए
जैसे होंटों पे ख़ून के क़तरे
फ़र्श पर ढेर था पतंगों का
धब्बा इक मलगुजे-से[1] रंगों का
ज़र्द यूं पड़ रही थी शम्मअ़ की लौ
हुस्न पर जैसे मौत का परतौ[2]
ऊँचे मेहराब सर्द और ख़मोश
जैसे इक ज़ाहिदे-कफ़न-बरदोश[3]

शम्मअ़ जब हौले-हौले बुझने लगी
मेरे एहसास ने फरेरी ली

कल इसी ऐशगाह के अन्दर
नज़र आयेगा फिर वही मन्ज़र
रक़्स होंगे सरोद की धुन पर
इश्क़ सूंघेगा फूल चुन-चुनकर

१. मटमैले-से २. छाया ३. कंधे पर कफ़न लिए हुए विरक्त या पारसा

लोग बेफ़िक्र गीत गायेंगे
मौत पर फब्तियां उड़ायेंगे
बाँहें बाँहों में फंस के झूमेंगी
नज़रें नज़रों के तीर चूमेंगी
बिखरेगी बाज़ुओं में ज़ुल्फ़े-दराज़[1]
झूटे पिंदार[2] के खुलेंगे राज़
रेशमी पर्दे सरसरायेंगे
लोग थक-थक के उठते जायेंगे
इख़्तिलाफ़ात[3] हैं जहां की असास[4]
इसको यक-रंगियां[5] नहीं हैं रास
रात जिस दम जमाही लेती है
दिन की आहट सुनाई देती है
टूटता है जुँही कोई डंठल
फूट पड़ती है इक नई कोंपल
मैंने तन - मन किसी पे वार दिया
दिल से बारे-ख़ुदी[6] उतार दिया
खोके सब कुछ उसे भी खो बैठा
यानी वो दूसरों का हो बैठा
लेकिन एहसास मुझसे कहता है
झरना रस्ता बदलता रहता है
(१९४०)

१. लम्बे केश २. अहंकार ३. विभिन्नताएँ ४. नींव ५. समानताएँ
६. अहम् का बोझ

कौन ?

कायनाते-दिल में[1] ये गाता हुआ कौन आ गया
हर तरफ़ तारे से बरसाता हुआ कौन आ गया
चार जानिब फूल बिखराता हुआ कौन आ गया
ये मुझे नींदों से चौंकाता हुआ कौन आ गया

मीठी - मीठी आग एहसासात में जलने लगी
रूह पर लिपटी हुई ज़ंजीरे-ग़म गलने लगी
ज़िन्दगी की शाखे-मुर्दा फूलने - फलने लगी
नकहतों से[2] चूर शर्मीली हवा चलने लगी
दहर में[3] मस्ती को नहलाता हुआ कौन आ गया

ज़र्रा-हाए-ख़ाक[4] तारों की ख़बर लाने लगे
आस्मानों पर धनुक के रंग लहराने लगे
नख़्ल[5] अपनी शाने - रअनाई पे[6] इतराने लगे
सर्द झोंके डालियों के साज़ पर गाने लगे
क़ल्बे-आलम को[7] ये तड़पाता हुआ कौन आ गया

ज़िन्दगी की तल्ख़ियां इक ख़्वाब होकर रह गईं
शौक़ की गहराइयां पायाब होकर रह गईं

---

१. दिल की दुनिया में २. सुगंधियों से ३. संसार में ४. मिट्टी के कण ५. पेड़ ६. सुन्दरता की शान पर ७. दुनिया के दिल को

काली रातें रूकशे - महताब[1] होकर रह गईं
सुस्त नब्ज़ें रेअ़शा-ए-सीमाब[2] होकर रह गईं
बर्क़ को[3] मानिंद लहराता हुआ कौन आ गया

चुन लिये किसने मेरी पलकों से अश्कों के शरार[4]
किसने अपने क़ल्ब से[5] भींचा है मेरा क़ल्बे-ज़ार[6]
छट गये जज़्बात पर छाए हुए गहरे ग़ुबार
मुड़ गई अफ़कार में[7] चुभती हुई इक नोके-ख़ार[8]
बीती घड़ियों को ये लौटाता हुआ कौन आ गया

जो कभी तारों में जाकर झिलमिलाया, वो न हो
जो कभी फूलों में छुपकर मुस्कराया, वो न हो
दूर रह कर भी जो रग-रग में समाया, वो न हो
जो मेरे अब तक बुलाने पर न आया, वो न हो
ये लजाता, रुकता, बल खाता हुआ कौन आ गया

ये तो ख़ुद मेरे तसव्वुर का है इक अंक्से-जमील[9]
ये तो दिल की धड़कनो में हो रही है क़ाल-ओ-क़ील[10]
आह लेकिन ये रुख़े-पुरनूर[11], ये चश्मे-कहोल[12]
लड़खड़ाती चाल में पिनहां ख़िरामे-रोदे-नील[13]
आईना-सा मुझको दिखलाता हुआ कौन आ गया

(१९४२)

◊ ◊ ◊

१. चांद से लज्जित २. पारे की सी तड़प रखने वाली ३. बिजली की ४. अग्नि-कण ५. दिल से ६. दुखित दिल ७. रचनाओं में ८. कांटे की नोक ९. सुन्दर प्रतिबिम्ब १०. असंगत बातचीत ११. सुन्दर चेहरा १२. सुरमई आंखें १३. नील नदी की सी चाल

भोर आई

अंधियारे का दर्पन टूटा पूरब ने पौ बरसाई
अंगारे का झूमर पहने ऊषा ने ली अंगड़ाई
जंगल महके, पंछी चहके, लहकी बहकी पुरवाई
भोर आई

रुकी-रुकी-सी, झुकी-झुकी-सी, दुखी-दुखी-सी आशायें
मचल-मचल के, उछल-उछल के, गगन-झरोके छू आयें
मन में सपनों की महारानी मन ही मन में इतराई
भोर आई

धुआंधार पच्छम की बस्ती, धड़-धड़ पूरब देश जले
सूरज देवता घात लगाये, रात की देवी हाथ मले
किरनों की गोपी कुहरे में कांप-कांप के चिल्लाई
भोर आई

(१९४३)

शफ़क़[1]

हर नई पौद ने इक ताज़ा सनम[2] ढाल लिया
नित नये बुत, नये मन्दिर, नये पूजा के उसूल
शंख बजते रहे, जलते रहे रंगीं फ़ानूस
रूह घुलती रही, होता रहा इन्सान मलूल[3]

क़स्रे-शाही से[4] गिराए गये नीलम, पुखराज
संगरेज़ों को[5] निगलते रहे मजबूर अवाम
खुश्क कांटों में बदलते रहे ख़ैरात के फूल
सूखे जबड़ों को जकड़ती रही ज़रतार[6] लगाम

हुस्न बिकता रहा ज़रबफ़्त के[7] पर्दों से उधर
इश्क़ सुनता रहा बजते हुए फ़ौलाद का शोर
क़ाफ़िले लुटते रहे, मंज़िलें बेगाना रहीं
चांद बुझते रहे, तकते रहे महबूस[8] चकोर

हर नया दौर सद - उम्मीद - बदामां[9] आया
ज़िंदगी ख़स्ता - ओ - दर्मांदा - ओ - मजबूर रही
इक शहनशाह उठा, इक शहनशाह बढ़ा
इसी चक्कर में अज़ल से[10] ये ज़मीं चूर रही

---

१. ऊषा २. मूर्ति ३. दुखित ४. राज-महल से ५. पत्थर के टुकड़ों को ६. सुनहरी ७. रेशम के ८. बंदी ९. सैंकड़ों आशाएं चमकाता हुआ १०. आदि-काल से

नागहां[१] एक धुग्रां-धार दरीचा खड़का
शोख़-सी शम्मग्र् बढ़ी, लौ की ज़बां थर्राई
सरसराती हुई ज़ुल्मत के[२] निशेबों से[३] उठी
शफ़क़े - सुर्ख़ नई सुबह के नग़्मे गाती

इक नये दौर का परतौ[४] है उफ़क़ की लाली
इक नये हुस्न की ख़ातिर ये हिनाबंदी[५] है
एक ही सतह पे उतरे हैं निशेब ग्रौर फ़राज़[६]
ग्रब किस इन्सान को दावा-ए-ख़ुदावंदी[७] है
(१६४४)

१. ग्रकस्मात् २. ग्रंधेरे के ३. गहराइयों से ४. प्रतिबिंब ५. महंदी रचाना ६. ऊंच-नीच ७. प्रभुत्व का दावा

नागुज़ीर[1]

दरीचों में जाले, झरोकों में साए,
सुतूनों पे धब्बे, छतों पर धुंदलके
हवा में मचलते हुए से अंधेरे,
कहीं गहरे-गहरे, कहीं हल्के-हल्के
इधर मरमरीं फ़र्श की उखड़ी-उखड़ी
सिलों पर हैं क़र्नों की[2] चोटें नुमायां[3]
उधर आईना-रंग[4] दीवार पर हैं
खराशों की सूरत में सदियों के उनवां[5]
यहां धूल पर चंद कीड़ों ने लिक्खो
है तारीख़े-माज़ी[6] अनोखी ज़बां में
वहां इक ममोले के पंजों की धारी,
गिरें पत्तियां जैसे आबे-रवां में[7]
दरीचों में पर्दे, झरोकों में शम्मएं,
सुतूनों पे रोग़न छतों पर उजाले
खुले तज़्किरे ज़ुल्फ़ो-रुख़सारो-लब के,
धुले क़हक़हे जैसे रूई के गाले
ये मलबूस की[8] सलवटों में, हवा में,
फ़ज़ा में रवां[9] एक गंभीर ख़ुशबू
ये बाँहों में जकड़े हुए नर्म पैकर[10],
लचक जैसे कोंपल, लपक जैसे आहू

---

१. निश्चित, अनिवार्य २. युगों की ३. प्रकट ४. निर्मल ५. शीर्षक ६. अतीत का इतिहास ७. बहते जल में ८. लिबास की ९. बहती हुई १०. शरीर

इधर मरमरीं साग़रों में मै-ए-नाब
रक़्सां[१] है जैसे गुलाबी सवेरा
उधर आईना - रंग दीवार पर है
किसी अजनबी मम्लुकत का[२] फरेरा[३]
अगर वक़्त सूरज की ज़रकार[४] बहली
को सिर्फ़ एक पल के लिए रोक सकता
अगर ये जहां-दीदा काहन कभी—
इंक़िलाबात का रास्ता टोक सकता
लपकना मगर इसकी तक़दीर में है,
पलटना भी दुश्वार, थमना भी मुश्किल
ये राही क़यामत में सुस्ता सकेगा,
अज़ल इसकी नगरी, अबद इसकी मंज़िल
अगर वक़्त की शाहराहें मुअय्यन[५]
हैं—ये शाम, ये शब, ये पौ, ये सवेरा,
तो दहके हुए सुर्ख़ पहियों के चक्कर
में जल जायेगा अजनबी का फरेरा।
(१९४६)

◇ ◇ ◇

१. नृत्यशील २. देश ३. झंडा ४. सुनहरी ५. निश्चित

कारवां

जरसे - कारवां की[1] मौसीक़ी,
कारवां के ख़िराम की[2] ग़म्माज़[3]
जरसे - कारवां की ख़ामोशी,
कारवां के क़याम की[4] ग़म्माज़
जरसे - कारवां की नालाज़नी[5],
सफ़रे - नातमाम की[6] ग़म्माज़

न तरन्नुम मिला, न सन्नाटा
न मुक़द्दर में नाला-ए-शब[7] था
चंद क़ज़्ज़ाक़[8] जा रहे थे कहीं,
हमसफ़ीरो[9] ! ये कारवां कब था
दिल में बोसीदा लाश की सी बसांद,
लब पे गो एहतिरामे - मज़हब था
ज़िन्दगी - ज़िन्दगी पुकारते थे,
मुर्दा-ख़ोरी क़दीम मशरब[10] था
उनकी आंखों में प्यास जलती थी,
हमको जिसपर गुमाने-कौकब[11] था

१. कारवान के घड़ियाल की २. चाल ३. संकेतक ४. ठहरने की ५. आर्त्तनाद ६. अपूर्ण यात्रा की ७. रातों को रोना ८. डाकू ९. साथियो १०. पुराना धर्म ११. तारों की भ्रान्ति

जरसे - कारवां की धुन कैसी ?
कारवां का सुराग़ भी तो मिले
जिसकी लौ रास्ता सुझाती है,
अज़्म का[1] वो चिराग़ भी तो मिले
ख़ामशी इक तवील[2] सोच में है,
उतरे आते हैं बर्फ़ के गाले
चार - सू टूटते हुए तारे,
हर तरफ़ अंकबूत[3] के जाले
नागहां[4] ख़ामशी में लहर उठी,
नींद में कोई जैसे कुछ गा ले
जैसी उमड़ी हुई घटा में हिलाल[5],
जैसे सहरा की[6] गोद में लाले[7]
जरसे - कारवां के मुन्तज़िरो !
चाप क़दमों की सुन सको तो सुनो
ये करोड़ों नुक़ूशे - पा[8] , ये फूल
अपनी नज़रों से चुन सको तो चुनो
कारख़ानों में हौंकता फ़ौलाद,
जोशे-तख़लीक़ में[9] है शो'ला-बयां[10]
खेत, कानें, कटे हुए कुहसार[11],
हां ! यही तो हैं कारवां के निशां

---

१. संकल्प का २. लम्बी (गहरी) ३. मकड़ी ४. सहसा ५. नया चांद ६. मरुस्थल की ७. फूल ८. पद-चिह्न ९. निर्माण के जोश में १०. अग्नि-भाषी ११. पहाड़

वो इसी रास्ते से गुज़रे हैं,
जिनकी जानिब है इक जहां निगरां[1]
उनके दम से ज़मीं का ज़ौक़े-नुमू[2],
उनके दम से हयात ज़मज़मा-ख्वां[3]
उनकी तख़लीक़[4] महवरे-तहज़ीब[5],
उनकी मेहनत से ज़िन्दगी आसां
उनका माज़ी ग़ुबार-आलूदा[6],
और मुस्तक़बिल आफ़ताबे-जवां[7]
रहज़नों का[8] हिसार[9] टूट चुका,
एहतमामे-सफ़र[10] करो तो चलें
ख़ून की ख़ौफ़नाक दलदल से,
हमसफ़ीरो! उभर चलो तो चलें
जरसे-कारवां के मुन्तज़िरो!
चाप क़दमों की सुन सको तो चलें

◇ ◇ ◇

१. देख-भाल करने वाला २. विकास की अभिरुचि ३. जीवन गीत गा रहा है ४. रचना ५. सभ्यता की धुरी ६. धूल से अटा हुआ ७. जवान सूरज ८. डाकुओं का ९. क़िला १०. यात्रा की व्यवस्था

इन्सान

ख़ुदा अज़ीम[१] , ज़माना अज़ीम, वक़्त अज़ीम
अगर हक़ीर[२] है कोई यहां तो सिर्फ़ नदीम[३]
वही नदीम, वही लाडला बहिश्तों का
वही नदीम, जो मसजूद[४] था फ़रिश्तों का
वो जिसने जब से वजदान[५] को बुलंद किया
वो जिसने वुसअ़ते-आ़लम को[६] इक ज़क़ंद[७] किया
वो जिसने जुर्मे-मुहब्बत की जब सज़ा पाई
तो कायनात के सहराओं में बहार आई
वो जिसने फ़र्श को भी अ़र्श का जमाल[८] दिया
वो जिसने तुंद[९] अ़नासिर को[१०] हँस के टाल दिया
बढ़ा तो राहें तराशीं, रुका तो क़स्र[११] बनाए
उड़ा तो गीत बखेरे, झुका तो फूल खिलाए
वो जिसके नाम से अ़ज़्मत[१२] क़सम उठाती है
उसी की आज ख़ुदाई हँसी उड़ाती है
नहीं, किसी से बिगड़ना मेरा स्वभाव नहीं
मेरी सरिश्त में[१३] गुलज़ार है, अलाव नहीं

१. महान २. तुच्छ ३. शायर का उपनाम (मित्र) ४. उपास्य ५. आत्मिक आनन्द ६. संसार की विशालता को ७. एक छलांग (में पार) ८. सुन्दरता ९. प्रचण्ड १०. तत्वों को ११. महल १२. महानता १३. स्वभाव में

हज़ार बार शिकस्तों पे मुस्कराया हूं
मुसीबतों की गरज में भी गुनगुनाया हूं
अगर हरीमे-बक़ा से[१] फ़ना मिली है मुझे
उसी फ़ना में बक़ा की अदा मिली है मुझे
ख़ुदा-शनास[२] भी हूं और ख़ुद-शनास[३] भी हूं
ख़ुदा से दूर भी हूं और ख़ुदा के पास भी हूं
यहां ज़मीं पे भी तख़लीक़[४] काम है मेरा
कि किब्रियाई से[५] मन्सूब[६] नाम है मेरा
ज़मीं मेरी है, फ़ज़ा भी मेरी, ख़ला[७] भी मेरी
ख़ला मेरी है तो अक़लीमे-मावरा[८] भी मेरी
ख़ुदा के ज़हन का फ़नपारा-ए-अज़ीम[९] हूं मैं
तमाम दहर का[१०] दूल्हा हूं मैं 'नदीम' हूं मैं

◇ ◇ ◇

१. अस्तित्व के अन्तःपुर से २. आस्तिक ३. आत्म-परिचित
४. रचना ५. खुदाई ६. सम्बन्धित ७. शून्य ८. महा लोक ९. महान
कलाकृति १०. संसार का

तारीख़ की आवाज़

सनसनाते हैं अंधेरे तो लरज़ते क्यों हो
हर नई सुबह की तख़लीक़[१] यूंही होती है
रात की आंख से ढलका हुआ ताबां[२] आंसू
दरहक़ीक़त मेरे झूमर का गिरां[३] मोती है
बतने-गेती में[४] धड़कती हैं तजल्लीगाहें[५]
जब शफ़क़[६] शाम की वादी में लहू बोती है
कौन जाने कि चटकने की रियाज़त[७] है यही
लोग कहते हैं कि मासूम कली सोती है
जब कली चौंक के चटकी तो गुलिस्ताने-जहां[८]
इक अलाओ की तरह शो'ला-फ़िशां[९] भड़केगा
क़द्रें बदलेंगी, यक़ीं बदलेंगे, तुम बदलोगे
तीरगी में[१०] भी तजल्ली का गुमां धड़केगा
मैं तो कहती हूं मशीयत[११] भी तड़प उट्ठेगी
दश्ते-इन्सां से[१२] जब इद्राक[१३] का दर[१४] खड़केगा
नकहते-गुल में[१५] पिघल जाएगा कांटों का वुजूद
इतनी शिद्दत से मेरा अब्र-रवां[१६] कड़केगा

(१९४७)

१. उत्पत्ति २. प्रकाशमान ३. बहुमूल्य ४. संसार की कोख में ५. प्रकाश-पिंड ६. सूर्यास्त की लालिमा ७. श्रम, तपस्या ८. संसार-रूपी उपवन ९. शोले बिखेरता हुआ १०. अन्धेरे में ११. ईश्वरेच्छा १२. मनुष्यों के जंगल से १३. बोध १४. दरवाज़ा १५. फूल की सुगंधि में १६. गतिशील बादल

बहार और महकार

[चन्द ज़िन्दानी[1] दोस्तों की याद में]

(पहली नज़र में)

उतर कर शाख़े-गुल से[2] दामने-गुलचीं में[3] आए हैं
मगर ये गुल हैं या वीरानी-ए-गुलशन की[4] तस्वीरें
ये शबनम है कि गुलचीं ने गुलों में ख़ून छिड़का है,
बुझी आंखों में कांटे बन गईं, काजल की तहरीरें[5]
किसी के बिस्तरे-कमख़्वाब[6] पर लुट जायेंगी शब को
उरूसे-फ़स्ले-गुल के[7] मुन्तशिर[8] ख़्वाबों की ताबीरें[9]

(दूसरी नज़र में)

ख़िज़ां का रंग फ़क़ है, इस हक़ीक़त के तसव्वुर से[10]
बहारें मिट के भी महकार को मरने नहीं देतीं
जहां से शाख़ टूटी है वहीं से शाख़ फूटी है
नमू की क़ुव्वतें[11] इस ज़ख़्म को भरने नहीं देतीं

१. कारावासी २. फूल की डाली से ३. पुष्प-चयन करने वाले की या माली की झोली में ४. बाग की वीरानी की ५. रेखायें ६. रेशमी बिस्तर ७. वसन्त-रूपी दुल्हन के ८. अस्त-व्यस्त ९. स्वप्न-फल १०. कल्पना से ११. विकास की शक्तियां

यही तख़लीक़ का[1] एजाज़[2] है, जिसके भरोसे पर
　　खिज़ां में भी चमन को सींचने की रस्म जारी है
नई कलियों के इक अंबोह को[3] तमहीदे-रंगीं[4] है
　　कली जो शाखे-गुल से दस्ते-गुलचीं ने उतारी है
गुलिस्तां से निकल कर काकुलों में[5] जिसने दम तोड़ा
　　हक़ीक़त में वो कल आईना-ए-फ़स्ले-बहारी[6] है

मेरी टूटी हुई कलियो ! मेरे उतरे हुए फूलो
　　तुम्हारी ही महक से ज़हने-इन्सां[7] ताज़ादम होगा
खिलेगा फूल बनकर, लहलहाएगा चमन बनकर
　　तुम्हारी याद में अश्कों से जो रुख़सार[8] नम[9] होगा

(१९५२)

◇　　◇　　◇

१. रचना या निर्माण का　२. चमत्कार　३. समूह की　४. सुन्दर भूमिका　५. केश-पाशों में　६. वसन्त-ऋतु का प्रतीक　७. मानव-मस्तिष्क　८. गाल　९. सजल

थपकी

(एक किसान औरत का अपने शौहर से ख़िताब[1])

मेरे बालों में सरसों के तारे
मेरे हाथों में गंदुम के ख़ोशे
मेरी झोली में मक्की के दाने
मेरे दिल में मुहब्बत के तोशे
तुंद झोंके मेरे हम-सफ़र हैं
धूप मेरी सुनहरी सहेली
खेत मेरे ख़यालों के आंगन
मैं इन्हीं में पली, इनमें खेली
मेरी आंखों में तस्वीर तेरी
मेरे होंटों पे तेरी कहानी
मेरी बातों में तेरे क़सीदे[2]
मेरा पिंदार[3] तेरी जवानी
झुटपुटे तक अभी हाथ तेरे
हल की हत्थी से हटने न पायें
मांग की तरह सीधी समारें
टेढ़ी लीकों से कटने न पायें
मैं यहां इन चटानों पे बैठी
तुझको दोहे सुनाती रहूंगी
अपनी आवाज़ की थपकियों से
हाथ तेरा बटाती रहूंगी

१. सम्बोधन २. प्रशंसात्मक गीत ३. कल्पना (घमंड)

सीपियों में किसी जल-परी ने
कितनी मेहनत से आंसू छुपाए
इन दहकते हुए आंसुओं से
एक साहिर ने[1] मोती बनाये
जब समन्दर में तूफ़ान आया
सीपियां साहिलों को सिधारीं
कैसा अंधेर है आंसुओं से
ताजिरों ने दुकानें निखारीं
मेरे प्यारे तेरी उंगलियों ने
कितने दानों से धरती सजाई
और दानों को सिक्के बनाकर
तेरे मालिक ने डफ़ली बजाई
जल-परी हो कि दहक़ान[2] मेरा
लुट रहे हैं, मगर कौन जाने
आंसुओं में जहन्नुम छुपे हैं
गोलियां हैं ये गंदुम के दाने
हाए मैंने ये क्या कह दिया है
कोई सुनता न हो मेरा दोहा
आंसुओं की कहानी में कैसे
चमचमाने लगा सुर्ख़ लोहा

◇ ◇ ◇

---

१. जादूगर ने २. किसान

बहार आएगी

सिर्फ़ ताराजि-ए-गुलजार का[१] शिकवा तो नहीं
आस्मां पर भी सितारों की कमी पाता हूं
शफ़क़े-शाम[२] हो या सुबह की अंगड़ाई हो
सब नज़ारों में बहारों की कमी पाता हूं
जिस्म कहता है कि मैं हद्दे-नज़र को[३] छू लूं
ज़हन[४] कहता है सहारों की कमी पाता हूं

अजनबी राह से पहुंचा हूं यहां तक; लेकिन
मुझको इस बज़्म से मानूस[५] न होना आया
मैं महक बनके क़फ़स में भी पर-अफ़शां[६] ही रहा
रंग बनकर मुझे महबूस[७] न होना आया
तीरगी[८] कुल्बा-ए-दहक़ां की[९] रही मद्दे-नज़र
हजला-ए-शाह का[१०] फ़ानूस न होना आया

मेरी मंज़िल को उफ़क़ पार बताने वाले
मैंने देखा है उफ़क़-ता-ब-उफ़क़[११] कोई नहीं
एक मर्कज़ हो तो जचता है तजस्सुस[१२], लेकिन
अनगिनत दायरों में घूमती रहती है ज़मीं

१. उपवन की बर्बादी का २. सूर्यास्त की लालिमा ३. नज़र की सीमा को ४. मस्तिष्क ५. अभ्यस्त ६. पंख फैलाए ७. कारावासी ८. अंधकार ९. किसान का छोटा-सा घर १०. बादशाह की दुल्हन के कमरे का ११. क्षितिज से क्षितिज तक १२. तलाश

हर उफ़क़ पर उफ़क़े-नौ की[1] सदा आती है
तेरी मंज़िल है बहुत दूर कहीं, और कहीं

अब मुसाफ़िर को नये अज़्मे-सफ़र से[2] क्या काम
अब इसी बज़्म पे परचम[3] मेरा लहराएगा
इस बियाबां में चमनज़ार सजाने के लिए
मेरा एहसास मेरा आईना बन जाएगा
इतने तूफ़ान उठाऊंगा कि तारीख़ों में
अपने ताबूत से[4] दहक़ान[5] निकल आएगा

मुंजमिद कुहरे को[6] चटख़ायेगी सूरज की किरन
इन धुंदलकों के कलेजे में उतर जाएगी
साए सिमटेंगे कि ज़ुल्मत पे[7] कोई आंच न आए
तीरगी[8] चाहेगी लेकिन न अमां[9] पाएगी
सीना-ए-संग की[10] हिद्दत से[11] खिलेंगे गुलज़ार
इतनी शिद्दत से ज़माने में बहार आएगी

◇ ◇ ◇

१. नव-क्षितिज की २. यात्रा के संकल्प से ३. झंडा ४. लाश बन्द करने का सन्दूक़ ५. किसान ६. जमी हुई धुंद को ७. अंधेरे पर ८. अंधकार ९. शरण १०. पत्थर की छाती की ११. गर्मी से

वक़्त के खंडर

कितना तारीक[1] है इस शब का घना सन्नाटा
चांद निकला है, मगर चांद की एक-एक किरन
नोके-नश्तर की तरह दिल में उतर जाती है
और जब हद से गुज़र जाती है सीने की जलन
चांद बुझ जाता है और चांदनी मर जाती है

दश्ते-दिल से[2] जो निकलती है गुज़रगाहे-ख़याल[3]
अपने सीने पे सजाए हुए यादों के निशां
आज इक ज़ख़्म की मानिंद उभर आई है
एक-एक पल में सिमट आती हैं कितनी सदियां
एक-एक सांस मेरा आलमे-तनहाई[4] है

यूं तो हर दौर में जज़्बात की रुत आती है—
जब तेरी याद से भर जाता है पैमाना-ए-जां[5]
तेरी चापें उमड़ आती हैं मेरे ख़्वाबों में
सर-ब-सिजदा[6] नज़र आता है मेरा शे'रे-जवां[7]
तेरे पैकर की[8] दमकती हुई मेहराबों में

१. अन्धकारपूर्ण २. हृदय-रूपी जंगल से ३. विचारों का मार्ग
४. एकान्त का संसार ५. प्राण-रूपी मदिरा-पात्र ६. नत-मस्तक
७. जवान शे'र ८. शरीर की

यूं तो काटे हैं कड़े कोस तेरी फ़ुर्क़त के
दर्द में अब जो चमक है, कभी पहले तो न थी
आज तो तेरे तसव्वुर से[१] भी आंच आती है
आज की शब तेरी सोचें भी हैं घबराई हुई
याद आती है तो इक हूक-सी बन जाती है

आज की शब कहीं वो शब ही न लौट आई हो
उठ सकी जिसमें न ख़ुद शब के क़दमों की सदा[२]
जिसमें इक उम्र से गुम है तेरा पैमाने-वफ़ा[३]
जिसमें जब चांद भी उभरा तो धुआं फैल गया
पास जिसके मेरी आंखों के सिवा कुछ भी न था

◇ ◇ ◇

१. कल्पना से २. आवाज़ ३. प्रेम-प्रतिज्ञा

इर्फ़ाने-हयात[1]

ज़िन्दगी एक ख़्वाब थी गोया
सारी दुनिया सराब[2] थी गोया
हर तरफ़ धुंद, हर तरफ़ साए
जैसे लम्बे सफ़र में नींद आए
राज़-ही-राज़ बात-बात अपनी
थी फ़रेबे-नज़र[3] हयात अपनी
यूं ख़यालों में घुट गया था दिमाग़
जैसे ऊंघते सरे-मज़ार[4] चिराग़
फिर तेरे लब मेरे लबों तक आए
छाए आंखों पे गेसुओं के[5] साए
तेरे पैकर की[6] नर्मियों की क़सम
तेरी सांसों की गर्मियों की क़सम
तेरी बाँहों के लोच की सौगंद
तेरी आंखों की सोच की सौगंद
ज़िन्दगी आगही पे[7] बार[8] न थी
एक ललकार थी, पुकार न थी

◇ ◇ ◇

---

१. जीवन का ज्ञान २. मरीचिका ३. नज़र का धोखा ४. क़ब्र के सिरहाने ५. केशों के ६. शरीर की ७. ज्ञान या जानकारी पर ८. बोझ

मेरी शिकस्त

मुझे तसल्सुले - लैलो - नहार की[1] सौगंद
बुझा नहीं है सरे-राहे-इन्तिज़ार[2] चिराग़
गुलों में लिपटी हुई यादे-यार की सौगंद
खिला हुआ है अभी तक मेरी शिकस्त का बाग़
चटख़ गया है अगर फ़र्ते-तिश्नगी से[3] अयाग़[4]
अगर ग़ुबारे - सरे - राह से[5] अटा है दिमाग़
तो इस ग़ुबार में हैं कितनी मंज़िलों के सुराग़[6]
मुझे शबाब की उस यादगार की सौगंद

उसी शिकस्ते-तमन्ना के[7] दम से आज मुझे
दिखाई देते हैं कितने सनम[8] चटानों में
रही अज़ीज़[9] कुछ ऐसी जहां की लाज मुझे
कि मैं भटक न सका तीरा[10] आस्मानों में
कोई गुदाज़[11] नहीं ख़ुल्द के[12] फ़सानों में
मेरी बहिश्त है तिनकों के आशियानों में
बड़ा सरूर है इन्सां की दास्तानों में
लुभा सका फ़क़त[13] इन्सान का मिज़ाज मुझे

---

१. काल-चक्र की २. प्रतीक्षा के मार्ग का ३. पिपासा के आधिक्य से ४. प्याला ५. रास्ते की धूल से ६. निशान ७. प्रेम की पराजय के ८. मूर्तियां ९. प्रिय १०. अंधकारपूर्ण ११. मृदुलता १२. जन्नत के १३. केवल

मैं तेरे जिस्म की हिद्दत[1] अभी नहीं भूला
उसी की आग मेरे शो'ला-ए-हयात में[2] है
मैं अपने शौक़ की शिद्दत[3] अभी नहीं भूला
वो कैफ़ियत[4] तो अयां[5] मेरी बात-बात में है
मेरा ग़ुरूर तेरे हुस्न के सबात में[6] है
तू मेरे दिल में नहीं सारी कायनात में[7] है
तू दिन की तरह निहां[8] इस अंधेरी रात में है
मैं तेरे ज़ौक़ की जिद्दत[9] अभी नहीं भूला

तेरे लबों की नमी और तेरी नज़र की किरन
मेरे शऊर में[10] तहलील[11] होके फूल बनी
ये रात, जिसकी जबीं पर[12] है तीरगी की[13] शिकन
मेरे लिए तो तेरे गेसुओं का तूल बनी
मेरी शिकस्त, मेरी फ़तह की रसूल[14] बनी
मेरी शिकस्त, मेरे रास्ते की धूल बनी
मेरी शिकस्त तो इद्राक का[15] उसूल बनी
कली का ख़ून हुआ और संवर गया है चमन

◇ ◇ ◇

१. गर्मी २. जीवन के शोले ३. तीव्रता ४. स्थिति ५. प्रकट ६. स्थायित्व ७. ब्रह्माण्ड में ८. निहित ९. नवीनता १०. बुद्धि में ११. विलय १२. माथे पर १३. अंधेरे की १४. दूत १५. बोध का

चली मशीन चली

एक बटन कुछ कहकर तड़पा, सारा ढांचा जागा
चक्कर की रफ़्तार चुराकर पुर्ज़ा-पुर्ज़ा भागा
रेशे-रेशे रस दौड़ाकर चटकी एक कली
चली मशीन चली

लोहा जब लोहे को काटे ठना ठना ठन बोले
उचक उचक कर चोटें मारे शो'लों के पर तोले
'मिल' के चारों खूंट बखेरे तानें भली-भली
चली मशीन चली

हम तपते फ़ौलाद के टुकड़े इक रौ में दौड़ायें
जैसे एक क़तार में सज कर दिये दमकते जायें
जैसे चांद बहे झरने में बनकर डली-डली
चली मशीन चली

धात के इक तूदे को[1] हमने गाला और उछाला
अपनी जवानी देकर हमने उसका रंग उजाला
एक किया जब ख़ून-पसीना तब ये कील ढली
चली मशीन चली

१. ढेर को

कील ढली तो सोना बनकर मिल-मालिक तक पहुंची
अपनी उजरत बढ़ते-बढ़ते आखिर दिक़[1] तक पहुंची
जल को जगाने वाली मछली तेल में आन तली
चली मशीन चली

हम मज़दूर, किसान, कुली, शायर, मुन्शी, हरकारे
जग की रौनक़ हमसे, हम ही जग में फिरें बिचारे
बिकती है सौ रूप बना कर मेहनत गली-गली
चली मशीन चली

इक धुर्रे से उड़ा शरारा, इक चक्कर में घूमा
इस चक्कर ने धन-दौलत के अंबारों को तूमा
अंगारों से फूल झड़े—कुछ ऐसी आग जली
चली मशीन चली

माज़ी को[2] तारीख़ का सारा धोका आंखें झपके
दुनिया-भर के मेहनतकश[3] इक लश्कर बनकर लपके
कोई पुकारे "हय्या-हय्या"—कोई "अली-अली"
चली मशीन चली

एक बटन कुछ कहकर तड़पा, सारा ढांचा जागा
चक्कर की रफ़्तार चुराकर पुर्ज़ा-पुर्ज़ा भागा
रेशे-रेशे रस दौड़ाकर चटकी एक कली
चली मशीन चली

० ०

१. क्षय रोग २. अतीत की ३. श्रमजीवी

आज़ादी के बाद

मुन्तशिर[1] पत्तियां ख़यालों की
पेच खाती हैं यूं हवाओं में
जिस तरह चर्ख़ के[2] तमाम नुजूम[3]
यक-ब-यक उड़ चलें ख़लाओं में[4]

कोंपलों से उगे हैं अंगारे
जिनकी हिद्दत से[5] तप रहे हैं चमन
बुन रहे हैं गले - सड़े पत्ते
कितनी जामिद[6] हक़ीक़तों के कफ़न

रोटियां बोटियों से तुलती हैं
इस्मतों की सजी दुकानों पर
पेट भरने के बाद, नाचता है
ख़ून का ज़ायक़ा[7] ज़बानों पर

आदमियत पलट के तकती है
अपने बचपन की रहगुज़ारों को[8]
जैसे माअ़ज़ूल शहरयार[9] गिने
अपनी अज़मत की[10] यादगारों को

१. बिखरी हुई २. आकाश के ३. सितारे ४. शून्य में ५. गर्मी से ६. जड़ ७. स्वाद ८. रास्तों को ९. पदच्युत बादशाह १०. महानता की

ज़िन्दगी, अ़ज़्मे-ज़िन्दगी से[१] तिही[२]
कारवां के ग़ुबार में गुम है
ज़ाहिदे-कुहनासाल की[३] मानिंद
मक़बरों के शुमार में[४] गुम है

एक आफ़ाक़गीर[५] सन्नाटा
"ज़िन्दगी ! ज़िन्दगी" पुकारता है
सिटपिटाता है, अपने होंटों से
ख़ून की पपड़ियां उतारता है

ज़िन्दगी को संभालने की मुहिम
कब मुक़द्दर के[६] इख़्तियार में है
ये ज़मीं, ये ख़ला[७] की रक़्क़ासा
आदमे - नौ के[८] इन्तिज़ार में है

◇ ◇ ◇

---

१. जीवन-संकल्प २. ख़ाली ३. बूढ़े विरक्त की ४. गणना में
५. सार्वभौमिक ६. भाग्य के ७. शून्य ८. नव-मानव के

मुग़विया *

रात ख़ामोश है
सरबर-आवुर्दा अशजार[1] दिन-भर के रक़्से-मुसलसल से[2]
थक हार कर
बाज़ुओं को समेटे
अंधेरे के बिस्तर पे ख़्वाबीदा[3] हैं
सर्द झोंके ख़िरामां[4] हैं लेकिन कोई चाप उठती नहीं
जैसे शाही कनीज़ें, जो मलबूस के[5] नुक़रई[6] हाशियों को
संभाले हुए
कांच के फ़र्श पर चल रही हैं
सितारों की आंखों में नींदें हैं
रफ़्तार में एक ऐसा बहाव है
जैसे फ़ज़ा से उतरते हुए बर्फ़ के नर्म गाले
पुरअसरार[7]
आवाज़ से बेनियाज़
अव्वलीं[8] इश्क़ की धीमी सरगोशियों की तरह
रात ख़ामोश है
जैसे अपने ही बालों में लिपटी हुई सांवली-सी दुल्हन

*अपहरण की हुई [१९४७ ई० में भारत और पाकिस्तान में हज़ारों स्त्रियों से जो अमानवीय व्यवहार हुआ, यह नज़्म उसी प्रकोप की प्रतिक्रिया है। —सम्पादक]

१. ऊंचे पेड़ २. निरंतर नृत्य से ३. निद्रित ४. गतिशील ५. लिबास के ६. रजत ७. रहस्यपूर्ण

जिसके माथे की अफ़शां पे[1]
गालों का ग़ाज़े पे
हाथों की महंदी पे
सीने के उमडे हुए अज़्मे-तख़लीक़[2] पर
उसके अपने ही पैकर[3] की ख़ुशबू ने
वो दायरे बुन दिये हैं
जो छूने से घुल जायेंगे—
रात ख़ामोश है
रात की ख़ामशी कितनी गहरी है, किस दर्जा गंभीर है
किसमें हिम्मत है जो ज़ोर की सांस तक ले सके
रात के इस विक़ार[4] और पिंदार[5] को ठेस पहुंचा सके
किस क़दर तनतने, कितनी प्यारी रऊनत से[6] लबरेज़[7] है
रात की ख़ामशी !
रात की ख़ामशी कितनी गहरी है, किस दर्जा गंभीर है।
रात ख़ामोश है
एक चीख़ आस्मां से ज़मीं तक ख़राशें उगाती हुई
चार जानिब लपकती चली जा रही है
हवा का बहाव उलझने लगा है
सितारे लरज़ने लगे हैं
ख़ुद अपने ही बालों में लिपटी हुई सांवली-सी दुल्हन
टूटती नींद की डोरियां अपनी पलकों से चुनती हुई

---

१. शृंगार की एक सामग्री (एक प्रकार का पाउडर) २. उत्पत्ति के संकल्प ३. शरीर ४, ५. प्रतिष्ठा और आत्म-सम्मान ६. गौरव से ७. परिपूर्ण

चौंक उठी है
ख़मोशी की गंभीरता का भरम खुल गया है
विक़ार और पिंदार के आइनों की कई किर्चियां हर तरफ़ मुन्तशिर[१] हैं
ये गुस्ताख़ आवाज़ किसकी थी ?
ये कौन था ?
जिसकी वहशत ने[२] तूफ़ां उठाया है !
क़ुदरत के इक शे'र की जिसने तज़्हीक[३] की है !
न जाने ये गुस्ताख़ आवाज़ किसकी थी ?
ये कौन था ?
रात की ख़ामशी फड़फड़ाने लगी है
शबों के वरक़[४] चीख़ते और बजते हुए हर तरफ़ उड़ रहे हैं
ये रातें, ये दिन
और ये शामें ये सुबहें
घटायें उमड़ती हुई और छटती हुई
बिजलियाँ जल रही हैं, बुझ रही
कड़क है
चमक है
वरक़ उड़ रहे हैं
वरक़ थम गये हैं
सुकूत[५]—एक गंभीर गहरा सुकूत
एक पुरअसरार[६] सन्नाटा—
एक बार फिर रात ख़ामोश है

---

१. बिखरी हुई २. पशुता ने ३. उपहास ४. पृष्ठ ५. मौन
६. रहस्यपूर्ण

रात की ख़ामशी में
बहुत दूर से
नींद में चूर इक आवाज़ आने लगी है
इस आवाज़ में रात की खामशी का शिकस्ता[1] विक़ार
एक टूटा हुआ तनतना
ज़ख्मखुर्दा[2] सी खुद-एअ्तमादी[3]
पुकार
एहतिजाज[4]
और जाने कहां का तास्सुर[5] है
आवाज़ आने लगी :—
"तुम नहीं जानते
तुम जो नामूसो-इस्मत की[6] छाती में आज़ादियों के अलम[7]
गाड़ते हो
मुझे तुम नहीं जान सकते
सियासत के बाज़ार की जिन्स को[8] कौन पहचान पाए !
किसे ध्यान आए—
कि मैं कौन हूं ?
क़ौम के चन्द बरखुद-ग़लत[9] रहनुमा
मेरी तक़दीस को[10] बेच कर
इक नई जंग
इक ताज़ा सौदागरी के लिए

१. टूटा हुआ २. घायल ३. आत्म-विश्वास ४. विरोध-प्रकाशन या विरुद्ध-वाक्य ५. प्रभाव ६. सतीत्व की ७. झंडे ८. माल ९. आत्म-प्रवंचना में ग्रस्त १०. पवित्रता को

फिर से तैयारियां कर रहे हैं
मैं इस शोर में आज किसको पुकारूं
बताओ किसे
किसको आवाज़ दूं
किससे ये राज़ कह दूं
कि मैं मज़हबो-नस्ल के चंद रंगीं ग़ुबारों के बदले में बेची हुई
एक औरत हूं
बेटी हूं
मां हूं
बहन हूं
मैं इक मुग़विया हूं !"

◇ ◇ ◇

दरांती

चमक रहे हैं दरांती के तेज़ दंदाने
ख़मीदा[1] हल की ये अल्हड़, जवान नूरे-नज़र
सुनहरी फ़स्ल में जिस वक़्त ग़ोताज़न होगी[2]
तो एक गीत छिड़ेगा, मुसलसल और दराज़[3]
नदीम[4] अज़ल से[5] है तख़लीक़ का[6] यही अंदाज़
सितारे बोए गए, आफ़ताब[7] काटे गये
हम आफ़ताब ज़मीरे-जहां में[8] बोयेंगे
तो एक रोज़ अज़ीम इन्क़िलाब काटेंगे
हम इन्क़िलाब ज़मीरे-जहां में बोयेंगे
ज़मीं पे ख़ुल्दे-बरीं का[9] जवाब काटेंगे

कोई बताए ज़मीं के इजारादारों को[10]
बुला रहे हैं जो गुज़री हुई बहारों को
कि आज भी तो उसी शाने-बेनियाज़ी से
चमक रहे हैं दरांती के तेज़ दन्दाने

---

१. झुके हुए २. डुबकी लगायेगी ३. दीर्घ ४. साथी ५. आदिकाल से ६. उत्पत्ति ७. सूरज ८. संसार की अन्तरात्मा में ९. जन्नत का १०. अधिपतियों को

सुनहरी फ़स्ल तक इसकी चमक नहीं मौक़ूफ़[१]
कि अब निज़ामे-कुहन[२] भी इसी की ज़द में[३] है
ख़मीदा हल की ये अल्हड़, जवान नूरे-नज़र
जब इस निज़ाम में लहरा के ग़ोताज़न होगी
तो एक गीत छिड़ेगा—मुसलसल और दराज़
नदीम ! अज़ल से है तख़लीक़ का यही अंदाज़
सितारे बोये गये, आफ़ताब काटे गये

◇ ◇ ◇

१. सीमित २. पुरानी व्यवस्था ३. पकड़ में

आदमी

शायरों, राहिबों[1] , सूफ़ियों ने कहा—ऐ नशेबों के[2] कीड़ो
ख़ुदा दूर है
आदमी का ख़ुदा तक पहुंचना ग़लत—आदमी का तसव्वुर[3]
भी मजबूर है
मैंने फूलों से, शबनम से, तारों से पूछा, तो सब झेंपकर मुस्कराने
लगे
मैं तो समझा था इख़्फ़ाए-हक़[4] सिर्फ़ 'ख़ल्लाक़ दानिशवरों'[5]
ही का दस्तूर है
मैंने एहसास के अनगिनत तार छेड़े मगर कोई नग़मा न पैदा हुआ
यानी इन्सां का वजदान[6] भी इस अल्वही[7] धुंदलके की शिद्दत
से मसहूर[8] है
आख़िरे-कार जब आदमियत से पूछा तो ये देखकर दम-बख़ुद[9]
रह गया
आदमी का ख़ुदा तक पहुंचना ग़लत !—आदमी से अभी आदमी
दूर है
आदमी आदमी को समझने लगा तो ख़ुदा ख़ुद ज़मीं पर उतर
आयेगा—
आदमी का ख़ुदा तक पहुंचना तो क्या ! आदमी तो ख़ुदाई पे
छा जायेगा

◇ ◇

---

१. पादरियों २. निचाइयों के ३. कल्पना ४. सत्य को छुपाना
५. निर्माता बुद्धिजीवी ६. सूझ या जानकारी ७. ख़ुदाई ८. माया-
जाल में ग्रस्त ९. स्तब्ध

नया सफ़र

तेरे बालों में पिरोने को चुनी थी जो कली
मुंजमिद[१] क़तरा-ए-ख़ूँ[२] था मेरे अरमानों का
जाने किस जब्रे-मशीयत से[३] बिगड़ कर मैंने
रुख़ किया तेरी जवानी के शबिस्तानों का[४]
तेरे आग़ोश में लाया था मुझे बीमो-ख़तर[५]
सनसनाते हुए रोते हुए वीरानों का
इश्क़ हैरान रहा, हुस्न पशेमान रहा
यही अंजाम है उलझे हुए अफ़सानों का
तेरे गेसू को[६] संवारूं कि सुनूं वावेला
इल्मो-हिकमत के[७] गरजते हुए तूफ़ानों का

इम्तियाज़ात के[८] माथे पे ये मज़दूर का नाम
एक धोका है सियासत के दबिस्तानों का[९]
ज़ुल्मते-शब में[१०] किसी शम्मअ़ को जल लेने दे
फिर जुनूं[११] देख रिवायात के[१२] परवानों का
क्यों किया फ़र्श को भी गर्दिशे-अंजुम का[१३] ग़ुलाम
बस अगर अ़र्श पे चलता नहीं इन्सानों का

१. जमा हुआ २. लहू की बूंद ३. ईश्वरेच्छा के दमन से ४. शयनागारों का ५. भय, शंका ६. केशों को ७. ज्ञान के ८. विभेदों के ९. पाठशालाओं का १०. रात के अन्धेरे में ११. उन्माद १२. परम्पराओं के १३. नक्षत्रों के चक्कर का

अपनी रिफ़अत को[1] खलाओं में छुपा रक्खा है
नाम बदनाम है पस्ती के सना-ख़्वानों का[2]
फ़लसफ़ा खाक-ब-सर[3], शायरी कशकोल-ब-दस्त[4]
कोई पुर्सां[5] नहीं फ़ितरत के निगहबानों का
अब कोई आदमे-नौ[6] आए, तो शायद उभरे
अक्स[7] फ़िर्दौस की[8] भूली हुई पहचानों का
मैं खयालों के लबादे में तो छुप सकता हूं
साथ देना है मगर चाक गिरेबानों का
मुझको अब तुझसे बहुत दूर लिये जाता है
एक अंबोह[9] बिलकते हुए इन्सानों का
इनको इर्फ़ां के[10] चमनज़ार में[11] पहुंचाऊंगा
और फिर तेरे ही दरबार को लौट आऊंगा

◇ ◇ ◇

१. ऊंचाई को २. स्तुति-कर्ताओं का ३. सिर में मिट्टी लिये ४. हाथ में भिक्षा-पात्र लिये ५. पूछने वाला ६. नव-मानव ७. प्रतिबिम्ब ८. जन्नत की ९. समूह १०. ब्रह्म-ज्ञान के ११. उपवन में

तास्सुरात[1]

हाए ये काली घटाओं का गरजना बार-बार
हाए ये खपरैल के छप्पर पे बूंदों का मल्हार
हाए ये भीगे हुए आंचल में सिमटी बिजलियां
तन गये हैं यक-ब-यक मेरे शिकस्ता[2] दिल के तार

रूह के पुरहौल[3] वीरानों में पिछली रात को
तैरती है एक दोशीज़ा की ये मौहूम[4] लय
"राह तकती हूं तेरा बैठी हुई परदेस में
तू मुझे धोका नहीं देगा—मुझे मालूम है"

हाए ये मेरी जुनूं-सामां[5] मुहब्बत के खंडर
जैसे इक बोसीदा ऐवां के[6] शिकस्ता[7] बामो-दर[8]
हाए ये गुज़री हुई घड़ियों का लहने-दिलख़राश[9]
जैसे उल्लू की सदाओं का फ़ज़ाओं पर असर

किस क़दर बदनाम है मेरी जुनूं-सामानियां
और कितनी मुख़्तसर-सी दास्ताने-इश्क़ है
वो निगाहों का तसादुम[10], वो लबों की कपकपी
और वो कांसी की गागर का छलकना-पै-ब-पै[11]

○ ○ ○

१. अनुभूतियां २. भग्न ३. भयानक ४. अस्पष्ट, भ्रम-मूलक ५. उन्मादपूर्ण ६. महल के ७. टूटे हुए ८. दरवाज़े और छतें ९. हृदयविदारक ध्वनि १०. परस्पर टकराव ११. बार-बार

खरी-खरी

सुबह को जब सरे-कुहसार[१] शफ़क़[२] फूलती है
लोग कहते हैं कि पल-भर में सवेरा होगा
कौन जाने कि ये लाली है अनासिर का[३] मज़ाक़
और सूरज की घटाओं में बसेरा होगा
ऐन मुमकिन है कि ऐलाने-सहर के[४] बावस्फ़[५]
दोपहर को भी अंधेरा ही अंधेरा होगा
कौन जाने कि अगर धुंद हटी, अब्र[६] छटा
एक तूफ़ान ने आफ़ाक़ को[७] घेरा होगा
ऐन मुमकिन है कि तूफ़ान के दब जाने पर
अब्र का इक नये अंदाज़ में फेरा होगा
कौन जाने कि इधर अब्र खुलेगा, तो उधर
रात के हाथ में ज़ुल्मत का[८] फरेरा[९] होगा

मैंने इन दायरों में घूमके देखा है, कि तुम—
मुझ में ग़ल्तां हो[१०] मगर मुझसे गुरेज़ां[११] भी हो
तुम सितारा हो, शफ़क़ हो, गुले-ताज़ा हो, मगर
सनसनाता हुआ पुरहौल[१२] बियाबां भी हो

१. पर्वत पर २. ऊषा ३. तत्वों का ४. प्रभात होने की घोषणा के ५. बावुजूद ६. बादल ७. संसार को ८. अंधेरे का ९. झंडा १०. डूब जा ११. हटे-हटे १२. भयानक

तुम जो बसती हो जवानी के समनज़ारों में[१]
अपनी तनहाई के एहसास से वीरां भी हो
तुम जो कतराके निकलती हो मेरी नज़रों से
कितने क़िस्सों का दमकता हुआ उन्वां[२] भी हो
तुम जो कहती हो कि हीरों से गिरां[३] है औरत
शबनम और फूल की मानिंद फ़रावां[४] भी हो
तुमने लूटा है मुझे, तुमने बसाया है मुझे
मेरी रहज़न[५] भी हो, मेरा सरो-सामां भी हो

डबडबाती हुई आंखों से न बहलाओ मुझे
टिमटिमाते हुए तारों के चलन जानता हूं
सुर्ख़ होंटों में है पामाल[६] जवानी की पुकार
मैं कि फ़नकार हूं, रंगीनी-ए-फ़न जानता हूं
इस अटकते हुए लहजे से न खाऊंगा फ़रेब
मैं तो इन्सां का हर अंदाज़े-सुख़न[७] जानता हूं
कैसे पिंदार की[८] मीनाओं में[९] बाल आते हैं
क्यों छुपाती हो कि मैं तिश्ना-दहन[१०] जानता हूं
कितनी रातों के अंधेरों से शनासाई[११] है
काले बालों की मैं एक-एक शिकन जानता हूं
डालियां मुझको बुलाती हैं गुलों से लदकर
फूल रोते हैं कि मैं राज़े-चमन जानता हूं

---

१. उपवनों में २. शीर्षक ३. बहुमूल्य ४. बहुतायत से ५. डाकू ६. रौंदी हुई ७. बातचीत का ढंग ८. अहम्मन्यता की ९. सुराहियों में १०. प्यासा ११. परिचय

हर सितारा नहीं पैग़ाम्बरे-नूरे-सहर[१]
मैं बसारत के[२] फ़रेबों में नहीं आऊंगा
इतनी शिद्दत से न अपनाओ, कि मैं आख़िरे-कार
पास रहकर भी बहुत दूर चला जाऊंगा
ये मुहब्बत कहीं महरूमी-ए-जावेद[3] न हो
खो गईं तुम तो ख़ुदा को भी नहीं पाऊंगा
इस तबस्सुम में कहीं तन्ज़ के[४] नश्तर तो नहीं
अब उमंगों को खिलौनों से न बहलाऊंगा
ओस मोती भी नहीं, ओस शरारा भी नहीं
इश्क़ को ख़ाम-ख़याली में न उलझाऊंगा
जिनके दम से मेरा विजदान[५] है इद्राक-आलूद[६]
उन शिकस्तों की मैं तारीख़ न दुहराऊंगा

◇ ◇ ◇

१. प्रभात के प्रकाश का दूत २. नज़र के ३. स्थायी वंचना
४. व्यंग्य के ५. सूझ, ज्ञान ६. बुद्धि से ओतप्रोत

मुसाफ़िर

ऊंघती राह में शीशम की ख़मीदा[१] शाखें
जाने किस सोच में मब्हूत[२] झुकी आती हैं
मौज-दर-मौज[३] पुरअसरार[४] घनी तीरगियां[५]
इन हवाओं में, ख़लाओं में[६] रची जाती हैं

कोई जुगनू, कोई तारा, कोई किरनों की रमक़[७]
–कुछ नहीं–कुछ भी नहीं–हश्र की[८] तमहीद[९] है रात
साथियो, ज़र्द पतावर में सिमटते भंवरो
कुछ कहो, कुछ तो सुनाओ–कोई क़िस्सा, कोई बात

और मोटर ने सुलगती हुई आंखें खोलीं
चाक-दर-चाक[१०] शबे-तार का[११] पैराहन[१२] है
मेरे पैकर से[१३] उचट कर मेरा साया रेंगा
इक मेरा दिल ही नहीं सारा जहां रोशन है

रोशनी एक उमडता हुआ सैलाब बनी
सन से एहसास के आइने पे कौंदे लपके
डोलती रह गईं शीशम की ख़मीदा शाखें
नींद में जैसे कोई चौंक के आंखें झपके

१. झुकी हुई २. स्तब्ध ३. लहर पर लहर ४. रहस्य-पूर्ण ५. अंधेरे ६. शून्य में ७. ज़रा-सी चमक ८. प्रलय की ९. भूमिका १०. अत्यन्त फटा हुआ ११. अंधेरी रात का १२. लिबास १३. शरीर से

दुगनी शिद्दत से ख़लाओं में घुली तारीकी[1]
ऊंघती राह का मुब्हम[2] सा निशां भी न रहा
साथ छोड़ा था मेरा जिसने तजल्ली में[3] कभी
वो सहारा मेरो क़िस्मत से यहां भी न रहा

◇ ◇ ◇

१. अंधेरा २. अस्पष्ट ३. प्रकाश में

सहरा-ए-लीबिया में[1]

रेगे - ज़रीं के[2] लबादे को उड़ाता, रेंगा
इक सियहफ़ाम[3] सिपाही का पुराना ढांचा
इक फ़िरंगी की सड़ी नाश्र्श के[4] नज़दीक रुका
बाज़ुश्रों को कभी परखा, कभी सर को जांचा

बोला—"सहरा की ये श्रासेब-ज़दा[5] तनहाई
श्राज श्राबाद हुई है तेरे दम से हमदम
मेरी पस्ती भी ग़लत, तेरी बुलंदी भी ग़लत
मौत ने ज़ीस्त के ज़ख़्मों पे लगाया मरहम

"तूने ख़ुद अपनी ही शाही की क़सम खाई थी
मैंने शाही की तबाही की क़सम खाई थी
मुत्तफ़िक़ कौन नहीं इसपे कि हम दोनों ने
एक मजबूर सिपाही की क़सम खाई थी

"ज़िन्दगी चन्द अक़ीदों के[6] सिवा कुछ भी नहीं
इन अक़ीदों के तसादुम से[7] है श्रालम में[8] बहार
कितनी दिलचस्प हक़ीक़त है ये अज़दाद का[9] हुस्न
मेरे चेहरे की सियाही तेरे चेहरे का निखार

१. लीबिया के मरुस्थल में २. सुनहली रेत के ३. अत्यंत काले ४. लाश के ५. प्रेत-ग्रस्त ६. मान्यताश्रों के ७. परस्पर टकराव ७. संसार में ९. प्रतिकूलताश्रों का

"रंग और नस्ल का ये सहर[1] तो टूटा लेकिन
उसी शिद्दत से है क़ायम तेरी बेगाना-रवी
कितना आबाद नज़र आए ये सहराई मज़ार[2]
चाके-हस्ती की[3] अगर मिल के करें बख़ियागरी

"एक ही क़तरे का एजाज़[4] नहीं फ़व्वारा
एक घर से नहीं बसता कोई क़र्या[5], कोई शहर
सात रंगों के मुरक्कब से[6] किरन बनती है
एक ही रंग नहीं बाइसे - रंगीनी - ए - दहर[7]"

◇ ◇ ◇

१. जादू २. मरुस्थल-रूपी क़ब्र ३. जीवन के फट...
४. चमत्कार ५. गांव ६. मिश्रण ७. संसार की रंगारंगी का कारण

क़दीम नक़्क़ादाने-फ़न का[1] पैग़ाम

(जदीद फ़नकारों के[2] नाम)

अंधियारे में रहने वालो ! अंधियारे का राज़ न खोलो
कांच के सपने टूट न जायें आहिस्ता - आहिस्ता बोलो
ज़हर न बन जाए ये जीना इस मीना में[3] नींदें घोलो
और ख़्वाबों के मोती रोलो

रक़्स की चकराती लहरों में बहने दो ज़हनों का[4] सफ़ीना[5]
जाम की[6] ख़ूं-आलूद[7] ख़ला में[8] घुलने दो इर्फ़ां का[9] नगीना
बटने दो इस्मत का ख़ज़ीना[10], फटने दो एहसास का सीना
एक करो क्यों ख़ून-पसीना

नंगों के नंगेपन की तुम नंगी तस्वीरें न बनाओ
काली कलमूही चीज़ों पर ग़ाज़ा छिड़को, रंग चढ़ाओ
छुपकर हम जो करते हैं तुम क्यों उसको सामने लाओ
बरखुरदारो होश में आओ

जाने क्या मक़सद[11] है तुम्हारा साफ़ कहो, इब्हाम को[12] छोड़ो
काम नहीं रुकते दुनिया के, जाम भरो, अंजाम को छोड़ो
जिसमें नासूरों की बू हो उस इल्हाम को[13] छोड़ो
दाम मिलें तो काम को छोड़ो

१. प्राचीन आलोचकों का २. आधुनिक कलाकारों के ३. सुरा-धानी ४. मस्तिष्कों का ५. नाव ६. प्याले की ७. रक्तमय ८. शून्य में ९. ज्ञान १०. ख़ज़ाना ११. अभिप्राय १२. अस्पष्टता १३. देव-वाणी

फ़र्श से लेकर अर्श - बरीं[1] तक बैठा है क़ानून का पहरा
तुम क्यों मुफ़्त में झल्लाते हो इन्सां गूंगा, सुल्तां बहरा
कैसे करोगे पार समुन्दर, इतना चौड़ा, इतना गहरा
वो डूबा जो पल भर ठहरा

दानाओं ने फ़र्माया है मुश्किल है तक़दीर से लड़ना
नामुमकिन है तलवारों का परबत की छाती में गड़ना
पक्के बेरों की क़िस्मत में लिक्खा है शाख़ों से झड़ना
और मिट्टी में गलना, सड़ना

देखो वो तूफ़ान उठा है, भागो ग़ारों में छुप जाओ
ऐवां[2] कांपे, छप्पर हांपे, पलटो पलटो, आओ आओ
मंज़िल की रट बेमाअ़नी है, रस्ता छोड़ो, जान बचाओ
लाओ अपना हाथ बढ़ाओ

ठानो भी कुछ अपने जी में, मानो भी ये बात हमारी
लाल आंखें क्यों झपकाते हो जिस्म पे क्यों है रे'शा[3] तारी
हाथों में फ़ौलाद की सख़्ती, सांसों में कौंदे की धारी
वो जाती है राह तुम्हारी

◇ ◇ ◇

१. सातवें आकाश २. महल ३. कम्पन

ग़ज़लें

मैं कब से गोश-बर-आवाज़[1] हूं पुकारो भी
ज़मीन पर ये सितारे कभी उतारो भी
मेरे जवान इरादो ! शबाब फ़ानी है
ग़ुरूरे - इश्क़ का देरीना[2] खेल हारो भी
सफ़ीना[3] महवे-सफ़र[4] हो तो ना-रसीदा[5] नहीं
क़दम-क़दम पे किनारे हैं, तुम सिधारो भी
मेरे ख़ुतूत पे[6] जमने लगी है गर्दे - हयात[7]
उदास नक़्श-गरो[8], अब मुझे निखारो भी
भटक रहे हैं शबे-तीरा में[9] ज़मीनो-ज़मां[10]
बस अब ख़ुदा के लिए काकुलें[11] संवारो भी
मेरी तलाश की मे'राज[12] हो तुम्हीं, लेकिन
निक़ाब उतारो, निशाने - सफ़र उभारो भी
ये कायनात अज़ल से[13] सुपुर्दे - इन्सां है
मगर 'नदीम' तुम इस बोझ को सहारो भी

◇ ◇ ◇

१. आवाज़ पर कान धरे हुए २. पुराना ३. नाव ४. यात्रा-मग्न ५. न पहुंचने वाला ६. नैन-नक्श ७. जीवन की धूल ८. चित्रकारो ९. अंधेरी रात में १०. धरती-आकाश ११. ज़ुल्फें १२. शिखर १३. आदि काल से

एजाज़[1] है ये तेरी परीशां - नज़री का
इल्ज़ाम न धर इश्क़ पे शोरीदा-सरी का[2]

ये सोच में खोई हुई अफ़सुर्दा[3] जवानी
शायद है नया रंग तेरी जल्वागरी का

इस वक़्त मेरे कुल्बा-ए-ग़म में[4] तेरा आना
भटका हुआ झोंका है नसीमे - सहरी का[5]

तुझ से तेरे कूचे का पता पूछ रहा हूं
इक वक़्त ये आलम है मेरी बेख़बरी का

० ० ०

१. चमत्कार २. पागलपन का ३. उदास ४. ग़म के घर में
५ प्रभात-समीर का

मेरे सुबू में[1] मेरे ज़ीस्त का[2] लहू तो नहीं
कहीं मिज़ाजे-ज़माना[3] बहाना-जू[4] तो नहीं

नदी की रौ में रवां है जो एक बर्गे-गुलाब[5]
कहीं शबाब का ऐवाने-रंगो-बू[6] तो नहीं

मचल-मचल के उभरती है जब चिराग़ की लौ
मैं सोचता हूं कि इन लर्ज़िशों में[7] तू तो नहीं

ये सब दुरुस्त शबे-हिज्र की सहर तो हुई
मगर शफ़क़ में[8] मेरा ख़ूने-आरज़ू तो नहीं

उफ़क़ की[9] सिम्त तो[10] क़र्नों से[11] चल रहा है 'नदीम'
कहीं ये राहनुमा मुझ-सा राह-जू[12] तो नहीं

◇ ◇ ◇

१. शराब के मटके में २. ज़िन्दगी का ३. दुनिया का स्वभाव ४. बहाने बनाने वाला ५ गुलाब की पंखड़ी ६. रंग तथा सुगंधि का भवन ७. कपकपाहटों में ८. ऊषा की ललिमा में ९. क्षितिज की १०. ओर तो ११. युगों से १२. राह ढूंडने वाला

लबों पे नर्म तबस्सुम रचा के घुल जायें
खुदा करे मेरे आंसू किसी के काम आयें

जो इब्तिदा-ए-सफ़र में दिये बुझा बैठें
वो बदनसीब किसी का सुराग़ क्या पायें

तलाशे-हुस्न कहां ले चली खुदा जाने
उमंग थी कि फ़क़त[1] ज़िन्दगी को अपनायें

बुला रहे हैं उफ़क़[2] पर वो ज़र्दरू[3] टीले
कहो तो हम भी फ़सानों के राज़ हो जायें

न कर खुदा के लिए बार बार ज़िक्रे-बहिश्त
हम आसमां का मुकर्रर[4] फ़रेब क्यों खायें

◇ ◇ ◇

१. केवल २. क्षितिज ३. पीले ४. पुनः

बिगाड़ हो कि बनाओ, अजीब तेरे सुभाओ[1]

निगाहों में हैं बुलावे तो अबरुओं में[2] तनाओ[3]

गजर बजा है सुहाना, मगर करो न बहाना

झुका क़मर[4] न दिखाओ, बुझा चिराग़ जलाओ

अगर घना हो अंधेरा, अगर दूर हो सवेरा

तो ये उसूल है मेरा कि दिल के दीप जलाओ

ख़ुदा के लब पे हंसी है, ख़ुदाई झूम रही है

तुम्हारी बात चली है मेरी हसीन ख़ताओ[5]

उधर शबाब का मस है इधर शराब का रस है

क़दम-क़दम पे क़फ़स है 'नदीम' देखते जाओ

◇ ◇ ◇

१. स्वभाव २. भौंहों में ३. तनाव ४. चांद ५. अपराधो

उफ़क़[1] निहां[2] है तो हद्दे-नज़र का[3] ज़िक्र करें
सितारे डूब रहे हैं सहर का ज़िक्र करें

फ़ज़ा का[4] ज़िक्र करें, बह्रो-बर का[5] ज़िक्र करें
बहुत बुलंद है फ़िर्दौस[6] घर का ज़िक्र करें

खिजां को बू-ए-गुलो-नस्तरन से[7] छलका दें
अगर बहार नहीं बर्गो-बर का[8] ज़िक्र करें

हमें तो अज़्मते-इन्सां को[9] आज़माना है
हुज़ूर फ़ल्सफ़ा-ए-खैरो-शर का[10] ज़िक्र करें

सितारे कौन चुनेगा बदस्ते-ज़ख्म-आलूद[11]
चलो ग़ुबारे-सरे-रहगुज़र का[12] ज़िक्र करें

◇ ◇ ◇

१. क्षितिज २. छुपा हुआ ३. नज़र की सीमा का ४. वातावरण का ५. समुन्दर और धरती का ६. जन्नत ७. फूलों की सुगंधि से ८. फल-फूल ९. मनुष्य की महानता को १०. उचित-अनुचित के दर्शन का ११. घायल हाथों से १२. मार्ग की धूल का

दरीचा-ए-महो-अंजुम में[१] जगमगाओ नहीं
किसी की तीरा-नसीबी को[२] आज़माओ नहीं

मुझे ख़बर है, मेरा इश्क़ है ज़बूं-अंजाम[३]
वो राज़, जो मुझे मालूम है बताओ नहीं

बराहे-रास्त गिराओ इसे लबों पे मेरे
शराब साग़रे-बल्लूर में[४] पिलाओ नहीं

ये धीमी-धीमी-सी लर्ज़िश है राज़ की ग़म्माज़[५]
तहे-निक़ाबे-हसीं[६] मुझ पे मुस्कराओ नहीं

न डालो अक्से-रुख़े-नाज़[७] मेरी आंखों पर
मुझे चिराग़ ही अच्छे इन्हें जलाओ नहीं

अभी नहीं इसे अपने करम का[८] अंदाज़ा
'नदीम' दस्ते-तलब को[९] अभी बढ़ाओ नहीं

◇　　◇　　◇

१. चांद-सितारों के दरीचों में　२. दुर्भाग्य को　३. अशुभ परिणाम वाला　४. शीशे के प्याले में　५. प्रकट करने वाली　६. सुन्दर निक़ाब के पीछे　७. सुन्दर चेहरे का प्रतिबिम्ब　८. कृपा का　९. याचना-हस्त को

बहार जब भी चमन में दिये जलाती है
हुजूमे-गुल से[1] मुझे तेरी आंच आती है

ब-फ़ैज़े-लज़्ज़ते-तख़लीक़[2] ख़ून हो कि कली
ख़ुद अपने ज़ख़्म के पर्दे में मुस्कराती है

ये शब है या शफ़क़-अफ़शानियों से[3] घबराकर
निगारे-शाम[4] हया से[5] लटें गिराती है

ये कायनात का[6] आहंग[7] है कि सहरे-हयात[8]
चटक कली की सितारों को गुदगुदाती है

ये रोदे-आब[9] ये तारे ये शहरे-लाला-ओ-गुल[10]
अभी वो आ न चुके और रात जाती है

◇ ◇ ◇

---

१. फूलों के समूह से २. उत्पत्ति के आनन्द की उदारता या कृपा से ३. सूर्यास्त की लालिमा के छिड़काव से ४. संध्यारूपी सुन्दरी ५. लज्जा से ६. विश्व का ७. गायन ८. जीवन का जादू ९. नदी १०. पुष्प-नगर

न शऊर में[१] जवानी, न खयाल में रवानी
कोई सुनके क्या करेगा मेरी दुख भरी कहानी

न ज़वाले - नागहानी[२] न उरूजे - जाविदानी[3]
मेरी ज़िन्दगी का उनवां[४] फ़क़त[५] एक लफ़्ज़ 'फ़ानी'

मेरे कुफ़्र की है ज़ामिन[६] ये ख़िरद-फ़रेब[७] दूरी
मेरी तीरगी[८] ज़मीनी, तेरा नूर[९] आस्मानी

ये शिकस्त का जहन्नुम कहीं फिर भड़क न उट्ठे
मेरे इश्क़ के खंडर पर न करें वो गुलफ़िशानी[१०]

तेरी ज़िन्दगी हक़ीक़त, मेरी ज़िन्दगी फ़साना
वो ख़िरद की[११] तंगज़र्फ़ी[१२], ये जुनूं की बेकरानी[१३]

न गुमाने-यार[१४] उनपर, न जमाले-यार[१५] उनमें
तेरे कोकबो-क़मर से[१६] न बहल सकी जवानी

रहे दिल का दाग़ दाइम[१७] कि झलक रही है इसमें
तेरे मेह्र की[१८] तमन्ना, तेरे क़ह्र की[१९] निशानी

मुझे और ज़िन्दगी दे कि है दास्तां अधूरी
मेरी मौत से न होगी मेरे ग़म की तर्जुमानी[२०]

◇ ◇ ◇

---

१. विवेक या समझ में २. आकस्मिक पतन ३. स्थायी उत्थान ४. शीर्षक ५. केवल ६. गवाह ७. बुद्धि को चकमा देने वाली ८. अंधकार ९. प्रकाश १०. पुष्प-वर्षा ११. बुद्धि की १२. तंगदिली १३. विशालता १४. मित्र या प्रेयसी होने का भ्रम १५. मित्र या प्रेयसी की (सी) सुन्दरता १६. चाँद-तारों से १७. स्थायी १८. कृपा की १९. प्रकोप की २०. व्याख्या

तलाश की जान है हक़ीक़त में[1] हश्र[2] तक तिश्नाकाम[3] होना
ये इल्तिजा है कि ऐन मंज़िल पे भी न बाला-ए-बाम[4] होना
तुम्हीं बताओ ये मस्लहत[5] थी कि इब्ने-आदम की[6] बदनसीबी
मेरा ज़मीं पे क़याम होना[7], तुम्हारा गर्दूं-मुक़ाम[8] होना
तनी हुई मुन्तज़िर क़बाओ[9], खुले रुखो[10], कारगर[11] अदाओ
तुम्हें मेरे ज़ब्त की[12] क़सम है कि हश्र में यूँ न आम होना
तुम्हारे दावा-ए-बरतरी की[13] बक़ा का[14] ज़ामिन है[15] दर-हक़ीक़त[16]
मेरी उमंगों का नर्म होना, मेरे इरादों का ख़ाम[17] होना
न जाने कितनी क़यामतों की अमीन[18] ये दो सदाक़तें[19] हैं
जुनूँ का[20] तूफ़ाँ-ख़िराम होना[21], शऊर का[22] नर्म-गाम[23] होना
मजाज़ की[24] तल्ख़ इन्तिहा[25] थी, कड़ी हक़ीक़त की इब्तिदा[26] थी
किसी तसव्वुर से[27] पहले-पहले 'नदीम' का हमकलाम होना

◇ ◇ ◇

---

१. वास्तव में २. प्रलय ३. प्यासा ४. छत पर ५. हित ६. आदि मानव की ७. बसना ८. गगन-वासी ९. चुग़ो १०. चेहरो ११. प्रभावकारी १२. सहन की १३. श्रेष्ठता के दावे की १४. नित्यता का १५. गवाह है १६. वास्तव में १७. कच्चा १८. विश्वस्त १९. वास्तविकतायें २०. उन्माद का २१. तूफ़ान का सा द्रुत-गामी २२. बुद्धि का २३. मंद-गामी २४. अवास्तविकता की २५. कटु चरम सीमा २६. प्रारंभ २७. कल्पना से

फिर भयानक तीरगी में[१] आ गये
हम गजर बजने से धोका खा गये

हाए ख़्वाबों की ख़याबां-साज़ियां[२]
आंख क्या खोली चमन मुर्झा गये

कौन थे आख़िर जो मंज़िल के क़रीब
आईने की चादरें फैला गये

उनका आना हश्र से[३] कुछ कम न था
और जब पलटे क़यामत[४] ढा गये

फिर वही अख़्तर-शुमारी का[५] निज़ाम[६]
हम तो इस तकरार से उकता गये

जिनको हम समझा किये अब्रे-बहार[७]
वो बगूले कितने गुलशन खा गये

आदमी के इर्तिक़ा का[८] मुद्दआ[९]
वो छुपाते ही रहे हम पा गये

अब कोई तूफ़ां ही लाएगा सहर[१०]
आफ़ताब[११] उभरा तो बादल छा गये

० ० ०

---

१. अंधकार में २. उपवन लगाना ३. प्रलय से ४. प्रलय
५. तारे गिनने का ६. क्रम या पद्धति ७. वसन्त का मेघ ८. विकास का
९. उद्देश्य १०. सुबह ११. सूरज

दमक रहा है रुख़े-शाम[1] पर सितारा-ए-शाम[2]
गुरूबे-मेहर[3] पे अब कौन धर सके इल्ज़ाम

इस एक पल में यहां एक उम्र बीत गई
तेरी निगाहे-करम[4] है कि गर्दिशे-अय्याम[5]

गुलों के उड़ते हुए रंग की तलाश में हूं
यही न हो मेरे ज़ौक़े-जमाल का[6] अंजाम

ब-ईं-ख़ुमार[7] ज़माने का साथ देता हूं
ज़मीं से उठ न सका मेरी सरख़ुशी का[8] मुक़ाम

ये सोचता हूं कि फूलों के रक़्स की बुनियाद
न जाने बादे-करम[9] है कि तेरा हुस्ने-ख़िराम[10]

किसी की तिश्ना-लबी[11] रंग ला रही है कि आज
लहू-लहू है तेरे हाथ में शराब का जाम

'नदीम' सीना-ए-गेती से[12] जब भी हूक उठी
मेरी निगाह जमी रह सकी न बर-लबे-बाम[13]

◇ ◇ ◇

---

१. संध्या के मुख पर २. संध्या का तारा ३. सूर्यास्त ४. कृपा-दृष्टि ५. काल-चक्र ६. सौन्दर्य-प्रियता का ७. मदिरालस के बावुजूद ८. नशे के सरूर का ९. कृपा-पवन १०. सुन्दर चाल ११. प्यास १२. दुनिया की छाती से १३. छत पर (जहां प्रेयसी के दर्शन होते हैं)

लाला-ओ-गुल के जो सामान बहम[1] हो जाते
फ़ासले दश्तो-चमन-ज़ार में[2] कम हो जाते

हमने हर ग़म से निखारी हैं तुम्हारी यादें
हम कोई तुम थे कि वाबस्ता-ए-ग़म[3] हो जाते

ख़ुद को खोया तो नहीं, तुम को न पाया, न सही
तुम को पाते तो उसी कैफ़ में[4] ज़म[5] हो जाते

फ़क़त[6] इक ज़ौक़े-परस्तिश की[7] नुक़ूश-आराई[8]
दैर[9] अगर दैर न होते तो हरम[10] हो जाते

हम अगर दार[11] पे खिंचते भी तो ऐ साहबे-दार[12]
अपनी नाकर्दा-गुनाही की[13] क़सम हो जाते

१. एकत्र २. उपवन और अरण्य में ३. ग़म से सम्बंधित ४. मादकता में ५. प्रविष्ट ६. केवल ७. आराधना की अभिरुचि की ८. रेखायें सजाना ९. मंदिर १०. मस्जिद ११. सूली १२. सूली पर लटकाने वाले १३. उन पापों की जो हमने किये नहीं

तेरी जवानी के पासबां[1] हश्र[2] तक यूँही नौजवां रहेंगे
तेरे गुलिस्ताने-रंगो-बू में नसीम[3] बनकर रवां रहेंगे

क़ुबूल है तेरी किब्रियाई[4] मगर कभी ये भी तूने सोचा
यहां भी तू है, वहां भी तू है, ग़रीब इन्सां कहां रहेंगे

मैं ज़ुल्मतों से[5] उलझ-उलझ कर वो दौर[6] नज़दीक ला रहा हूं
मुसाफ़िरों को तलाश में जब नुजूम के[7] कारवां रहेंगे

मेरी बग़ावत का आख़िरी आसरा है रोज़े-हिसाब तेरा
बहुत बड़े मा'रके रहेंगे, बहुत बड़े इम्तिहां रहेंगे

ये तेरे बन्दे हैं या मुक़द्दर के, हाथ में कांच के खिलौने
फ़ना से डरते रहेंगे, लेकिन हयात से सरगिरां[8] रहेंगे

जकड़ती जायेंगी इनकी रूहों को गर्दिशे-नौ-ब-नौ की[9] कड़ियां
अगर तेरे आस्मान इन्सान पे यूँही मेहरबां रहेंगे

मिज़ाजे-फ़ितरत पे[10] इब्ने-आदम की हर मसर्रत गिरां रही है
बहार आएगी और हम महवे-इन्तिज़ारे-ख़िज़ां रहेंगे

१. रक्षक २. प्रलय ३. मृदु समीर ४. ख़ुदाई ५. अंधेरों से ६. युग ७. सितारों के ८. अप्रसन्न ९. नये-नये चक्करों की १०. प्रकृति के स्वभाव पर

वो टूटती रात की ख़मोशी, वो तेरी आंखों की मयफ़रोशी[१]
हम उस धड़कती हुई हयात के उम्र-भर राज़दां रहेंगे

छुपा न ताख़ीर की[२] हक़ीक़त, कि झूटी अंगड़ाइयों के पीछे
ये गाल भी गुलफ़िशां[३] रहेंगे, ये होंट भी अर्ग़वां[४] रहेंगे

किनारे-महबूब[५] पाके, वो बेकरां[६] ख़लाओं में[७] रक़्से-पैहम[८]
मेरे नुक़ूशे-क़दम[९] सरे-कहकशां[१०], अबद[११] तक रवां रहेंगे

निक़ाब उठते रहेंगे, तनते रहेंगे राज़ों के ताने-बाने
ये है मशीअत की[१२] मस्लहत[१३], ऐ 'नदीम', वो बेनिशां रहेंगे

◇ ◇ ◇

---

१. शराब बेचना २. देरी की ३. पुष्पवर्षक ४. लाल ५. प्रेयसी का पहलू या गोद ६. असीम ७. शून्य में ८. निरंतर नृत्य ९. पद-चिन्ह १०. आकाश-गंगा पर ११. अंत-काल १२. ईश्वरेच्छा की १३. हित या ख़ूबी

क़तए

देख री, तू पनघट पर जाकर मेरा ज़िक्र न छेड़ा कर
क्या मैं जानूं, कैसे हैं वो, किस कूचे में रहते हैं
मैंने कब तारीफ़ें की हैं, उनके बांके नैनों की
"वो अच्छे ख़ुशपोश[1] जवां हैं" मेरे भय्या कहते हैं

◇ ◇ ◇

शहनाइयों के शोर में डोली जुँही उठी
इक नौजवां कहीं से पुकारा "मुझे बचाओ"
डोली से सिर निकाल के बोली हसीं दुल्हन
"क्या देखते हो, जाओ भी लिल्लाह[2] ! जाओ जाओ"

◇ ◇ ◇

ढोल बजते हैं, दनादन की सदा[3] आती है,
फ़स्ल कटती है, लचकती है, बिछी जाती है
नौजवां गाते हैं जब सांवले महबूब का गीत
एक दोशीज़ा[4] ठिठक जाती है शर्माती है

◇ ◇ ◇

---

१. सुन्दर वस्त्र पहनने वाला २. ख़ुदा के लिए ३. आवाज़
४. कुमारी

दिल की धड़कन तेरी पलकों की झपक में उमड़ी
देर तक राज़ रहे राज़, तो खुल जाता है
अपनी किरनों को समेटे हुए हंगामे-सफ़र[1]
चांद शबनम में उतरता है तो घुल जाता है

◇ ◇ ◇

छांव और धूप की तकरार है बुनियादे-हयात[2]
तुमको हर बात नई बात नज़र आती है
रो दिये हो तो अब ऐलाने-तबस्सुम[3] कर दो
कि सितारों के पिघलते ही सहर[4] आती है

◇ ◇ ◇

बर्फ़-ज़ारों पे[5] शुआओं के[6] अलाओ[7] भड़के
नद्दियां नींद से चौंकी कि बहार आ पहुँची
दिल पुकारा कि तमन्ना का सफ़र ख़त्म हुआ
आंख खोली तो मुहब्बत लबे-दार[8] आ पहुँची

◇ ◇ ◇

---

१. यात्रा के समय २. जीवन की नींव या आधार ३. मुस्कराहट की घोषणा ४. सुबह ५. हिम-देशों पर ६. किरनों के ७. अलाव ८. सली पर

फुटकर

तारों का गो शुमार[१] में आना मुहाल[२] है
लेकिन किसी को नींद न आए तो क्या करे

◇ ◇ ◇

मैं तुझको भूल चुका लेकिन एक उम्र के बाद
तेरा ख़याल किया था कि चोट उभर आई

◇ ◇ ◇

पसे-निक़ाब[3] मेरी बेबसी पे क़हक़हाज़न[४]
मैं जानता हूं कि तक़दीर थी हुज़ूर न थे
जज़ा[५] तो ख़ैर, सजा के लिए तरसते रहे
ग़ुलाम आपके इतने तो बेक़सूर न थे

◇ ◇ ◇

कोशिश के बावुजूद अभी तक न छुप सके
ज़ुल्फ़ों के पेचो-ख़म में ज़माने के पेचो-ख़म

◇ ◇ ◇

मुद्दत के बाद इज़्ने-तबस्सुम[६] मिला हमें
वो भी कुछ ऐसा तल्ख़ कि आंसू निकल पड़े

◇ ◇ ◇

वो आए भी तो बगूले की तरह आए गए
चिराग़ बनके जले जिनके इन्तिज़ार में हम

◇ ◇ ◇

---

१. गणना २. कठिन ३. निक़ाब के पीछे से ४. हंसता हुआ
५. प्रत्युपकार ६. मुस्कराहट की आज्ञा

उम्र भर रोने से रोने का सलीक़ा खो दिया
हर नफ़स के[1] साथ ये दरिया-दिली अच्छी नहीं

◇ ◇ ◇

मेरी बर्बादियों के राज़ न पूछ
राज़ का इन्किशाफ़[2] भी है राज़

◇ ◇ ◇

रातों को तारों से, दिन को ज़र्रा-हाए-खाक से[3]
कौन है जिससे नहीं सुनते तेरा अफ़साना हम

◇ ◇ ◇

जकड़ी हुई है इनमें मेरी सारी कायनात
गो देखने में नर्म हैं तेरी कलाइयां

◇ ◇ ◇

तसव्वुर[4] आपका, एहसास अपना, हमरही[5] दिल की
मोहब्बत को इसी तक़सीम ने[6] मंज़िल से बहकाया

◇ ◇ ◇

तू मेरी ज़िन्दगी से भी कतराके चल दिया
तुझको तो मेरी मौत पे भी इख़्तियार था

◇ ◇ ◇

१. प्राणी से २. प्रकटीकरण ३. धूलि-कणों से ४. कल्पना
५. साथ ६. विभाजन

हंगामा मच रहा है ख़यालों की बज़्म में
तूने दबी ज़बान में जाने कहा है क्या

◇ ◇ ◇

भला ये कौन सी मंज़िल है बेनियाज़ी की
कि आजकल मेरे होंटों पे तेरा नाम नहीं

◇ ◇ ◇

नोके-मिज़गां से[1] अश्क ढले और बह गये
इक दास्तान चन्द इशारों में कह गये
रुकने का नाम तक न लिया अहले-शौक़ ने[2]
दम लेने को जो बैठे वो बैठे ही रह गये
आने का इतनी दूर से कुछ मुद्दआ तो था
दीवाने ख़ामशी में कोई बात कह गये

◇ ◇ ◇

फिर मोड़ पे का'बे के सनमख़ाना[3] बनेगा
बतलाइये अब कौन न दीवाना बनेगा
रहने दे अभी ताक़ पे शम्मएं कि किसी रोज़
ख़ाकिस्तरे-परवाना से[4] परवाना बनेगा

◇ ◇ ◇

१. पलकों की नोक से २. प्रेमियों ने ३. मन्दिर ४. जले हुए पतंगे की राख

अगर चले हो मुसाफ़त[१] खिज़ां की तै करने
भरी बहार का भी एहतिमाम[२] करके चलो

◇ ◇ ◇

अहरमन[३] बनके भी देखा है कि इन्सां का ज़मीर
नूर ही नूर है, शो'ले का कहीं नाम नहीं

◇ ◇ ◇

शबे-सियह के सितारो, मेरे क़रीब रहो
कि मैं उफ़क़ पे[४] निगारे-सहर को[५] देख आऊं

◇ ◇ ◇

सहर-ब-दस्त[६] भी है शब अगर सियाह भी है
चटान संग है, लेकिन सनम-पनाह[७] भी है

◇ ◇ ◇

इस बेबसी में आप ही अपनी नज़ीर[८] हैं
हम नकहते-चमन के[९] भंवर में असीर[१०] हैं

◇ ◇ ◇

तेरे पहलू से उठकर खो गये हम
खयालों की घनी तनहाइयों में

◇ ◇ ◇

सूरज उभरा कि क़यामत जागी
रात गुज़री कि ज़माने गुज़रे

◇ ◇ ◇

---

१. फ़ासला २. प्रबन्ध या व्यवस्था ३. ख़ुदा ४. क्षितिज पर ५. उषा देवी को ६. हाथ में सुबह लिये ७. मूर्ति को अपने अन्दर छुपाए हुए ८. उदाहरण ९. उपवन की सुगंधि के १०. बंदी